Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-35
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 14 नवम्बर से 20 नवम्बर 2018 तक
कार्तिक शुक्ल सप्तमी से कार्तिक शुक्ल द्वादशी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

भक्ति का फल.. पृष्ठ- 2

डेंगू से बचाएगा.... पृष्ठ- 4

पर्यावरण के थर्मामीटर... पृष्ठ- 5

जहरीला धुआँ.... पृष्ठ- 7

जुबान है फिसल... पृष्ठ- 12

शुभकामनाएं

सभी देशवासियों व पाठकों को गुरु नानक जयंती, गंगा स्नान, एवं तुलसी विवाह पर हार्दिक शुभकामनाएं।

चन्द्रप्रकाश कौशिक — राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा — राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी — राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

भाजपा पर बढ़ा अध्यादेश का दबाव

केन्द्र सरकार श्रीराम मंदिर बनाने के लिये शीघ्र संसद में कानून बनाये–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

अब जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक बार फिर राम मंदिर बनाने की मांग दोहराई है तो भाजपा का अगला कदम क्या होगा, यह देखने वाली बात होगी, क्योंकि संघ के संयुक्त महासचिव मनमोहन वैद्य ने गत दिनों सरकार से कहा कि जल्द से जल्द राम मंदिर निर्माण के लिए वह जमीन अधिग्रहण करे और कानून बनाए। इससे पहले संघ प्रमुख मोहन भागवत ने भी १८ अक्टूबर को नागपुर में हुई दशहरा रैली के दौरान मंदिर के लिए कानून बनाने की बात कही शेष पृष्ठ 10 पर

पटाखों की दुकानें तुरन्त खोली जायें-हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

हिन्द महासभा भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में हिन्दू संगठनों ने सरकार, केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री श्री हर्ष वर्धन और वाणिज्य और उद्योग मंत्री जी से अनुरोध किया कि वे पटाखों की दुकानें तुरन्त खुलवाकर दीपावली के पावन पर्व को हर्षोउल्लास से मनाने दें। पत्रकार वार्ता में पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए अखिल भारत हिन्दू महासभा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक जी ने बताया कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में ग्रीन पटाखों के नाम पर पटाखों की दुकानों को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बन्द कराना बड़ी साजिश बताया गया। श्री कौशिक ने पटाखों को महामारियों से लड़ने का सुरक्षा चक्र बताते हुए सभी हिन्दुओं को धार्मिक आदेश दिया कि सभी हिन्दू इस साल दीपावली पर दोगुणे पटाखें छुटाकर मच्छरों से पनपी बीमारिया डेंगू, चिकनगुनिया आदि का विनाश करें। सभी हिन्दू रात्रि २.३० बजे तक अधिक से अधिक पटाखें छुड़ायें। श्री कौशिक ने महामहिम राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री जी, कानून मंत्री, मुख्य न्यायाधीश पर्यावरण मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री से भी अनुरोध किया है कि वे इस सुरक्षा चक्र को किसी भी हालत में टूटने न दें और तुरन्त सभी पटाखों की दुकानों को खुलवायें चाहे इसके लिये अध्यादेश ही क्यों न लाना पड़े। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि उच्चतम न्यायालय शीघ्र अपने निर्णय में सुधार कर हिन्दुस्तान के १२५ करोड़ हिन्दुओं को अपना महान पर्व दीपावली मनाने का अवसर प्रदान करें। यदि बार–बार हिन्दुओं की भावनाओं पर कुठाराघात किया गया तो हिन्दुओं के सब्र का बांध टूट जायेगा यदि न्यायालय कोई निर्णय न ले तो केन्द्र की श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार इस पर अध्यादेश लाये। पत्रकार वार्ता में दारा सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुकेश जैन ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ए.के. सीकरी और अशोक भूषण पिछले दो साल से दिल्ली में पटाखें की बिक्री साजिशन दुकानें बन्द कराकर रोक रहे हैं।

भक्ति का फल श्रद्धा पर आधारित

भक्ति पूजा व प्रार्थना का फल श्रद्धा पर निर्भर है जैसे श्रद्धा विहीन मंत्र अर्थहीन व निरर्थक होता है परन्तु यदि श्रद्धापूर्वक मंत्र का आश्रय लिया जाता है तो अवश्य फल मिलता है उसी अनुपात से जितनी श्रद्धा व समर्पण की भावना से मंत्र को आत्मसात् किया गया हो, अन्यथा मंत्र सार्थक नहीं हो सकता, मात्र जप बन कर रह जाता है। परमात्मा की पूजा, प्रार्थना के माध्यम से भक्ति करने से जो फल प्राप्त होता है वह भी श्रद्धा पर आधारित है अर्थात् जितनी अटूट व दृढ़ श्रद्धा होगी उतना फल अवश्य मिलता ही है। श्रद्धा में बड़ी ताकत होती है जो आत्मशक्ति को प्रकट करती है व अन्तर्मन से जब श्रद्धापूर्वक प्रार्थना की जाती है तो उसका प्रतिफल भी तत्काल देखा जाता है जैसे रोम में एक बार वर्षा नहीं हो रही थी। अतः बड़े पैमाने पर सामूहिक प्रार्थना का आयोजन किया गया, बहुत से लोग एकत्रित हो रहे थे, एक विद्यार्थी प्रार्थना में जाने के पूर्व अपने साथ छाता लेकर चलने लगा, यह देख कुछ लोग उसकी नादानी पर आश्चर्य से देख रहे थे कि क्या इसकी प्रार्थना इतनी प्रभावशाली हो सकती है कि तत्काल वर्षा होने लगेगी जो यह छाता साथ में लेकर चल रहा है। प्रार्थना के पश्चात् देखते ही देखते वर्षा होने लगी तब वह विद्यार्थी आराम से छाता ओढ़ कर घर की ओर चला जबकि अन्य लोग भीगते हुए घर जा रहे थे जिन्हें अपनी प्रार्थना पर अटूट श्रद्धा न होने का संकेत कहा जाता है। श्रद्धा में चमत्कार होता है जैसे सांप के काटे जाने पर मंत्रोच्चार द्वारा भी सांप का जहर उतारा जाता है, जहाँ न तो सांप का मंत्रोच्चार करने वाले को व न जिनका जहरा उतारा जा रहा है उन दोनों को मंत्र का अर्थ ही मालूम है, मात्र मंत्र पर श्रद्धा है जो फलीभूत हो रही है व मंत्रोच्चार के प्रभाव से जहर उतर जाता है, अर्थात् मंत्र हो अथवा प्रार्थना श्रद्धा के आधार पर ही फलवती व सार्थक होती है। इसलिए कहा गया है—श्रद्धा परम दुर्लभ है। एक बार किसी महात्मा के प्रवचन में नवकार महामंत्र को अत्यन्त प्रभावशाली व सर्व विघ्नहरण का मंत्र बताया जा रहा था जिसे सुनकर एक व्यक्ति को नवकार मंत्र पर श्रद्धा हो गई व कंठस्थ कर नियमित रूप से नवकार महामंत्र का श्रद्धापूर्वक ध्यान करने लगा व जहाँ कठिनाई अथवा मुसीबत सामने आती अटूट श्रद्धा के साथ नवकार मंत्र का स्मरण करता, समाधान निकल आता। अतः इस महामंत्र को अपने जीवन की अमूल्य धरोहर मानने लगे। एक बार वह व्यक्ति किसी शहर से गुजर रहा था वहाँ एक दुल्हा किसी बीमारी का शिकार होकर बेहोश हो गया था, जब उस व्यक्ति ने देखा तो कहने लगा मेरे पास एक मंत्र है, शायद उसका ध्यान व स्मरण करने से यह ठीक हो जाये। जब वह व्यक्ति ज्यों ही श्रद्धापूर्वक नवकार महामंत्र का स्मरण करने लगा बेहोश व्यक्ति होश में आ गया व खड़ा होकर चलने लगा। उपस्थित लोगों ने मंत्र के चमत्कार को देखा व उस व्यक्ति से पूछने लगे ऐसा कौन सा महामंत्र है जो इतना प्रभावशाली है। उस व्यक्ति ने सुना दिया कि किसी महात्मा की यह अदभुत देन है, जब लोगों ने नवकार महामंत्र को सुना तो कहने लगे, यह तो हम सब जानते हैं ऐसा सुनते ही उस व्यक्ति को लगा कि क्या यह मंत्र सब जानते हैं? इससे उसकी श्रद्धा में शिथिलता आ गई। अर्थात् जब तक अटूट श्रद्धा के साथ मंत्र का प्रयोग होता था तो वह सार्थक होता था अन्यथा श्रद्धाविहीन मंत्र अर्थहीन हो जाता है। धर्म का मूल आधार भी श्रद्धा है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों के जीवन में अचानक परिवर्तन आने की सम्भावना है। उर्जा का संचार बनायें रखें जिससे अपने कार्यो को सही वक्त पर पूर्ण कर सकें। लोगों पर अपनी छाप छोड़ने का प्रयास करें।

वृष : इस सप्ताह बहुत सारे लोगों पर अतीत की यादें हावी रहेगी जिससे कार्य करने में मन नहीं लगेगा। जो लोग कार्य की तलाश में भटक रहें है, उनको अवसर प्राप्त होंगे। निज स्वार्थ के कारण नियमों की अनदेखी न करें अन्यथा मुसीबत में फॅस सकते है।

मिथुन : इस सप्ताह आप सावधान रहें वरना ईर्ष्यालू व्यक्ति प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकते है। विरोधियों के तमाम प्रपंचों के बावजूद आप विजयी होंगे। रोजगार व कैरियर में स्थितियॉं आपके अनुकूल बनी रहेंगी। आर्थिक मामलों में सामान्य स्थिति बनी रहेगी।

कर्क : इस सप्ताह पारिवारिक व सामाजिक उत्तरदायित्वों का भार बढ़ सकता है। मित्रों से मनमुटाव की स्थितियां उत्पन्न हो सकती है। कठिन परिस्थितियॉं सामने आ सकती है जिनसे मुँह न मोड़े बल्कि उनका डटकर मुकाबला करें। मार्गदर्शन करने वाले लोग आप से नाराज हो सकते है।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोग असमंजस की स्थिति में पड़े रहेंगे। अनिर्णय की स्थिति आपके मन पर हावी रहेगी जिससे आप–अपने को हताश महसूस करेंगे। पुराने नाराज लोग आपके निकट आने की कोशिश करेंगे।

कन्या : इस सप्ताह आसान काम भी चुनौती के रूप में नजर आयेंगे। कुछ लोगों के गुप्त रहस्य उजागर हो सकते अतः सावधानी बरतने की आवश्यकता है। मानसिक उर्जा को बढ़ाने के लिए आप प्रयासरत रहेंगे। वाणी का प्रभाव बढ़ेगा और लोग आपकी बात सुनने को तैयार रहेंगे।

तुला : इस सप्ताह प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी जिससे मन में कई तरह के नकारात्मक विचार हावी होंगे। विरोधाभास की स्थितियों से निकलना अति–आवश्यक है। आर्थिक स्थितियों को सुधारने के लिए किये गये कामों में सफलता प्राप्त होगी । जीवन साथी के साथ बेवजह झड़प हो सकती है।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोगों को काम के प्रति निराशा हावी हो सकती है जिससे अध्यात्म की ओर रूझान बढ़ेगा। गलत निर्णय लेने से बचें वरना किये कराये पर पानी फिर जायेगा। आश्चर्यजनक तथ्य सामने आयेंगे जिनसे आपको दो–चार होना पड़ेगा। किसी प्रिय से मनभेद हो सकता है।

धनु : इस सप्ताह आप भागदौड़ में पड़े रहेंगे और जिसके कारण कुछ जरूरी कार्य अधूरे रह जाने की पूरी सम्भवना है। काम की अधिकता रहेगी अतः आप–अपनी क्षमतायें बढ़ाने की कोशिश करें। योजनाओं का फल आपके अनुरूप न आने से मन थोड़ा सा दुःखी हो सकता है।

मकर : इस समय यदि आप किसी से अपनी बात कहना चाहते है, तो आप सफल हों सकते हैं। सहयोगी आपका पूरा सहयोग करने के लिए तत्पर है। लेकिन आपको साहस पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता नजर आ रही है।

कुम्भ : इस सप्ताह कुछ कार्यो में शीघ्र निर्णय लेना ही हितकर रहेगा। परिवार में वाद–विवाद न करें अन्यथा अपमान का घूँट पीना पड़ सकता है। आपको मजबूरन रूढ़िवादी तरीको को अपनाना पड़ेगा जिससे मन में क्रोध उत्पन्न होगा।

मीन : इस सप्ताह कुछ ऐसे कार्य होंगे जिससे परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। कुछ लोगों किसी मांगलिक उत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा जिससे मन को शुकून मिलेगा। आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।।

हे अर्जुन! तू मुझ में मन वाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो और मुझ को प्रणाम कर। ऐसा करने से तू मुझे ही प्राप्त होगा, यह मैं तुझसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ; क्योंकि तू मेरा अत्यन्त प्रिय है।।६५।।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

सम्पूर्ण धर्मो को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों को मुझ में त्याग कर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।।६६।।

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति।।

तुझे यह गीतारूप रहस्यमय उपदेश किसी भी काल में न तो तपरहित मनुष्य से कहना चाहिये, न भक्ति रहित से और न बिना सुनने की इच्छा वाले से ही कहना चाहिये; तथा जो मुझ में दोषदृष्टि रखता है उससे तो कभी भी नहीं कहना चाहिये।।६७।।

न इमं परमं गुह्यं मदक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।।

जो पुरुष मुझ में परम प्रेम करके इस परम रहस्ययुक्त गीताशास्त्र को मेरे भक्तों में कहेगा वह मुझको ही प्राप्त होगा–इसमें कोई सन्देह नहीं है।।६८।।

3

हिन्दू सभा
वार्ता

दिनांक 14 नवम्बर से 20 नवम्बर 2018 तक

अध्यक्षीय

कांग्रेस के आत्मघाती वीर हैं थरूर

कांग्रेस में ऐसे तमाम नेता हैं जो अपने कर्मों से अथवा जुबान से पार्टी के पैरों में कुल्हाड़ी मारने का काम करते रहते हैं । कभी मणि शंकर अय्यर कभी दिग्विजय सिंह तो कभी चिदंबरम ने अपनी बयानबाजी से कांग्रेस की लुटिया डूबोने का काम किया है। शशि थरूर और नवजोत सिंह सिद्धू के बयानों ने कांग्रेस को परेशानी में डाल दिया है। थरूर ने गुड तालिबान बैड तालिबान की तर्ज पर गुड हिंदू बैड हिंदू की बहस छेड दी है। वहीं सिद्धू कह रहे हैं कि दक्षिण भारत जाने की तुलना में पाकिस्तान जाना ज्यादा बेहतर है। जाहिर है बीजेपी ने इन दोनों ही नेताओं के बयानों को तूल दे दिया है। **द हिंदू लिट फॉर लाइफ डायल ग २०१८** में चेन्नई में थरूर ने बाबरी मस्जिद के विध्वंस का जिक्र किया। थरूर ने कहा कि अधिकांश हिन्दुओं का विश्वास है कि अयोध्या भगवान *राम का जन्म स्थान है। लेकिन कोई भी अच्छा हिन्दू नहीं चाहेगा कि किसी दूसरे के पूजा स्थल को तोड़ कर वहां राम मंदिर बनाया जाए।* थरूर का यह बयान ऐसे समय आया है जबकि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी मंदिर यात्राओं पर निकलें हुए हैं। हालांकि विवाद बढ़ने पर कांग्रेस ने सफाई दी। कांग्रेस ने खुद को थरूर के बयान से अलग किया। बाद में थरूर भी सफाई देने के लिए मैदान में उतरे। उन्होंने सफाई देने के लिए ट्विटर का सहारा लिया। उन्होंने कहा कि अपने सियासी आकाओं की सेवा में मीडिया के कुछ लोगों की ओर से मेरे शब्दों को शरारतपूर्ण ढंग से तोड़–मरोड़ने की मैं निंदा करता हूं। मैंने कहा था कि अधिकांश हिंदू चाहते हैं कि राम जन्मभूमि पर मंदिर बने। लेकिन कोई भी अच्छा हिंदू नहीं चाहेगा कि यह किसी दूसरे के धर्म स्थान को तोड़ कर बनाया जाए। थरूर ने यह भी कहा कि एक लिट फेस्टीवल में उनसे उनकी व्यक्तिगत राय पूछी गई थी जो उन्होंने बता दी। थरूर ने कहां कि वे कांग्रेस के प्रवक्ता नहीं हैं और न ही उसकी ओर से ब्रोलने का दावा करते हैं। लेकिन मौके की तलाश में बैठी बीजेपी थरूर को सफाई से संतुष्ट नहीं है। बीजेपी प्रवक्ता शहनवाज हुसैन ने पूछा कि क्या थरूर अस्थाई मंदिर को हटाने की मांग कर रहे हैं जहां रोज पूजा होती है। उन्होंने कहा कि ऐसी मांग तो किसी ने नहीं की है, बीजेपी ने कहा कि इससे कांग्रेस का असली चेहरा सामने आ गया है। वैसे यह पहली बार नहीं जब थरूर की बयानों से कांग्रेस असहज हुई हो, वे इससे पहले कह चुके हैं कि अगर बीजेपी २०१६ में फिर जीती तो भारत को हिंदू पाकिस्तान बना दिया जाएगा। इस साल जुलाई में उन्होंने तिरुवनंतपुरम में कहा था कि अगर वे लोकसभा में अपनी मौजूदा संख्या को दोहरा लेने में कामयाब हो जाते हैं तो हमारा अपना लोकतांत्रिक संविधान नहीं बचेगा। क्योंकि तब संविधान को दरकिनार करने के लिए जरूरी तीनों तत्व उनके पास होंगे और वे नया संविधान लिख देंगे। उसमें हिंदू राष्ट्र का सिद्धांत होगा, अल्पसंख्यकों के लिए समानता खत्म कर दी जाएगी और हिंदू पाकिस्तान बना दिया जाएगा जिसके लिए महात्मा गांधी, नेहरू, *सरदार पटेल, मौलाना आजाद और हमारे स्वतंत्रता संग्राम की अन्य महान हस्तियों ने* संघर्ष नहीं किया था। मोदी सरकार पिछले चार साल में बनाए गए विभाजन, सांप्रदायिक कट्टरता, नफरत, असहिष्णुता और ध्रुवीकरण के माहौल से चल रही है। जबकि दूसरी ओर कांग्रेस भारत के सभी धर्मों और पंथों की विविधिता, बहुसंस्कृति, उदारता और सौहार्द्र के मूल्यों को प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन साफ है कि चाहे थरूर हों या फिर नवजोत सिंह सिद्धू, इन कांग्रेसी नेताओं तक यह बात नहीं पहुंची है, वर्ना अपनी पाकिस्तान यात्रा के दौरान वहां की सेना के प्रमुख को गले लगा कर विवाद खड़ा करने वाले सिद्धू एक बार फिर विवादास्पद बयान नहीं देते। उन्होंने भी एक लिट फेस्टीवल में ही विवाद खड़ा किया। कसोल में उन्होंने कहा कि जब वे तमिलनाडु जाते हैं तो वहां की भाषा नहीं समझ पाते. ऐसा नहीं है कि उन्हें वहां का खाना पसंद नहीं आता लेकिन लंबे समय तक उसे नहीं खा सकते। वहां की संस्कृति बिल्कुल अलग है। लेकिन जब वे पाकिस्तान जाते हैं तो उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। लेकिन दक्षिण भारत के बारे में उनकी टिप्पणी से हंगामा खड़ा हो गया बीजेपी उन पर हमला बोल रही है। पार्टी ने इसके लिए अपने दक्षिण भारतीय चेहरे को भी मैदान में उतार दिया। चाहे सिद्धू हों या फिर थरूर, इन दोनों नेताओं के ही बारबार विवाद खड़ा करने की पीछे की मंशा पर भी अब कांग्रेस के भीतर ही सवाल उठने लगे हैं। इससें पहले गुजरात चुनाव और आम चुनावों से पहले मणिशंकर अय्यर के बयानों से कांग्रेस बचाव की मुद्रा में आ चुकी है। ऐसे में यह भी सवाल उठता है कि ये सारे बयानवीर कहीं किसी रणनीति का हिस्सा तो नहीं हैं। अगर इस तरह के बयान रणनीति का हिस्सा भी हैं तो भी यह रणनीति कांग्रेस के लिए मीठे जहर की ही तरंह साबित होगी।

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

चुभ रही है मंदिर पर सरकार की खामोशी

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के नाम पर अपना अस्तित्व बढ़ाकर सत्ता में आई भारतीय जनता पार्टी की सरकार का मंदिर निर्माण पर कोई ठोस कदम न उठाना अब हिन्दू समाज को साल रहा है । जबसे सर्वोच्च न्यायालय के विरुद्ध जाकर सरकार ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति (अत्याचार निरोधक) अधिनियम में जब से संशोधन किया है तब से कोर्ट में विचाराधीन राम मन्दिर जैसे अनेक संवेदनशील मुद्दों की भी चर्चा आम हो गयी है। इन मुद्दों के दम पर सत्ता हासिल करने वाले दल अब तक कोर्ट की दुहाई देकर ही पल्ला झाड़ते रहे हैं। कई बार हम सुनते हैं कि अमुक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को फटकार लगायी या अमुक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से जवाब माँगा। सत्ताधारी दल के नेता भी अक्सर यह कहते हुए सुने जाते हैं कि हम सुप्रीम कोर्ट का सम्मान करते हैं। लेकिन हाल ही में देश के नेताओं ने एस.सी/एस.टी एक्ट के मामले में शीर्ष अदालत के निर्णय को जिस तरह से पलटा, उससे यह बात एकदम से स्पष्ट हो गयी है कि भारतवर्ष में वोट बैंक की राजनीति से ऊपर कुछ भी नहीं है। जनहित और स्वानुभव के आधार पर दिए गए उच्चतम न्यायालय के फैसलों को देश के नेता कभी भी बदल सकते हैं। लोकतांत्रिक प्रणाली के दुरुपयोग का इससे बड़ा उदहारण शायद ही कोई अन्य हो। एस.सी/एस.टी एक्ट में सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्ट के विरुद्ध जाकर किये गए संशोधन के बाद से देश का आम जन आसानी से यह बात समझ गया है कि सरकार यदि चाहे तो राम मन्दिर और धारा ३७० या ऐसे सभी मसलों को अध्यादेश बनाकर सुलझाया जा सकता है। राजतंत्रीय या सामंतशाही व्यवस्था को शोषणकारी मानते हुए विश्व के अनेक देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना की गयी। ताकि आम जन को न्याय मिल सके। भारत के लोकतन्त्र को विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र कहा जाता है। इसी बिन्दु को केन्द्र में रखते हुए ही भारतीय संविधान की संरचना हुई थी। दलितों के सबसे बड़े हितैषी और विचारक डॉ. भीमराव अम्बेडकर को संविधान सभा का अध्यक्ष बनाया गया था। उन्होंने संविधान में वे सभी प्रावधान रखवाए जो दलितों के हित में थे। दलितोत्थान के दृष्टिगत उन्होंने आरक्षण जैसी व्यवस्था भी दी। लेकिन वे दस वर्ष बाद इसकी समीक्षा भी चाहते थे। लेकिन जैसे ही लोकतांत्रिक व्यवस्था आगे बढ़ी वैसे ही देश में वोटों की लामबन्दी शुरू हो गयी। वोटबैंक को केन्द्र में रखकर संविधान में जहाँ अनेक संशोधन किये गए वहीं सन १६८६ में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति (अत्याचार निरोधक) अधिनियम जैसे कानून भी बनाये गए। २६ जनवरी १६५० को भारत के संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य बनने के दो दिन बाद अर्थात् २८ जनवरी १६५० को भारत का उच्चतम न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय अस्तित्व में आया था। भारतीय संघ की अधिकतम और व्यापक न्यायिक अधिकारिता उच्चतम न्यायालय को प्राप्त है। संविधान के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका संघीय न्यायालय और भारतीय संविधान के संरक्षक की है। इस तरह से देश की सर्वोच्च अदालत का प्रमुख कार्य संविधान की सुरक्षा और उसके अनुरूप आम जन को न्याय दिलाना है। लेकिन देश की संसद को संविधान में संशोधन का अधिकार प्राप्त है। संसद को यह अधिकार सम्भवतः इसलिए दिया गया होगा ताकि समय के साथ बदलती परिस्थितियों और व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर कानून बनाये व संशोधित किये जा सकें। लेकिन दुर्भाग्य से भारतीय संसद को प्राप्त इस विशेष अधिकार का राजनीतिक लाभ के लिए अब तक अनेक बार दुरुपयोग हो चुका है और आगे भी होता रहेगा। जहाँ तक संविधान में वर्णित कानूनों के सदुपयोग और दुर्पयोग का प्रश्न है। तो इस स्थिति का सबसे अधिक व्यावहारिक अनुभव सिर्फ और सिर्फ अदालतों के पास ही होता है। शायद अपने इसी अनुभव के आधार पर ही सर्वोच्च न्यायालय ने एस.सीध्एस.टी एक्ट के तहत तत्काल गिरफ्तारी पर रोक लगायी थी न कि पूरे कानून को ही समाप्त किया था। शीर्ष अदालत के इस निर्णय का विरोध करने वाले दलितों को अपने पक्ष में करने के लिए कांग्रेस ने विरोध की इस आग में जैसे ही घी डालना शुरु किया वैसे ही भाजपा को दलित वोट बैंक अपने नीचे से खिसकता हुआ दिखाई दिया और सरकार ने अदालतों के अनुभवों को दरकिनार करते हुए आनन.फानन में एस.सी/एस.टी एक्ट को संशोधित करके सदन के पटल पर रख दिया। दलितों के विरोध को पहले से ही हवा दे चुकी कांग्रेस के लिए यह सब एकदम से अप्रत्याशित जैसा था और उसके पास इस बिल का समर्थन करने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा ही नहीं बचा। जिसका परिणाम देश के सामने है। इस सबके बाद देश की जनता को यह भलीभांति समझ में आ जाना चाहिए कि सरकार चाहे तो मंदिर निर्माण हमेशा से ही केन्द्र सरकार के हाथ में था लेकिन सरकार इसे महज मुद्दा बना कर ही रखना चाहती है। अब जब एक बार फिर से चुनाव आने वाला है तो भाजपा इसका वास्तविक हल निकालने के बजाय इसे उलझाने की कोशिश कर रही है। लेकिन इस बार हिन्दू समाज कुछ अधिक जागरूक है और भाजपा की दाल को आसानी से नहीं गलने देगा।

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

डेंगू से बचाएगा पपीते का पत्ता

तनिष्का शर्मा

डेंगू एडीज नाम के मच्छर के काटने से होता है। अगर समय रहते इस पर ध्यान न दिया जाए तो यह जानलेवा साबित हो सकता है। इस रोग में प्लेटलेट्स बहुत तेजी से कम होने लगते हैं। सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, बुखार आना डेंगू के प्रमुख लक्षण हैं। ब्लड टेस्ट करके इसके इंफेक्शन का पता लगाया जा सकता है। डेंगू पर काबू पाने के लिए कोई अचूक दवा अभी तक सामने नहीं आई है। लेकिन कुछ प्राकृतिक नुस्खे डेंगू से बचने में हमारी मदद कर सकते हैं। आज हम आपको बताएँगे कि पपीते का पत्ता डेंगू के इलाज में किस तरह से फायदेमंद साबित हो सकता है।

आमतौर पर पपीता एक फल के रूप में कई तरह की बीमारियों को दूर करने की क्षमता रखता है, लेकिन इसके पत्ते भी औषधीय गुणों में भरपूर होते हैं। पपीते के पत्ते में प्लेटलेट्स को बढ़ाने की भरपूर क्षमता होती है। साथ ही साथ यह एंटी–मलेरिया के गुणों से भी भरपूर होता है। इस तरह से यह डेंगू और मलेरिया दोनों से लड़ने में हमारी मदद करता है। डेंगू के इलाज के लिए पपीते की पत्तियों के इस्तेमाल

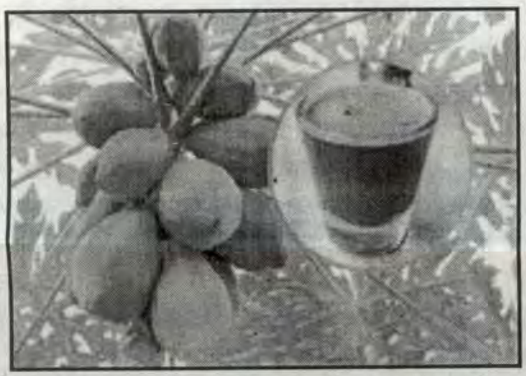

को लेकर कई तरह के शोध भी हुए हैं। ४०० डेंगू मरीजों पर किए गए ऐसे ही एक शोध में तकरीबन २०० लोगों का इलाज पपीते की पत्तियों से किया गया जबकि बाकी लोगों को डेंगू का सामान्य उपचार दिया गया था। शोध के बाद यह पाया गया कि जिन लोगों को पपीता के पत्तों की ट्रीटमेंट दी गई थी उनके प्लेटलेट्स काउंट बहुत तेजी से बढ़े थे और उनके साइड इफेक्ट्स भी कम थे।

एडीज मच्छरों से होने वाले डेंगू रोग में पपीते के पत्तियों के जूस का इस्तेमाल दवा के रूप में किया जाता है। पपीते की पत्तियाँ डेंगू के तमाम लक्षणों को खत्म करने में अहम भूमिका निभाती हैं। इसका इस्तेमाल करने के लिए सबसे पहले मध्यम आकार की कुछ पपीते की पत्तियों को आधा सुखा लीजिए। अब इन्हें धोकर कम से कम २ लीटर पानी के साथ तब तक उबालिए जब तक कि पानी आधा न रह जाए। फिर इस मिश्रण को छान लीजिए। प्राप्त जूस का सेवन करने से डेंगू रोग में काफी लाभ मिलता है।

नाभि-दोष का निवारण

डॉ. एम.सी. वार्ष्णेय

नाभि पेट पर एक गड्डे के समान है, जो गर्भनाल को अलग करने के कारण बनती है। माँ के पेट में बच्चे का पोषण नाभि के माध्यम से ही होता है। स्वस्थ रहने के लिए नाभि का अपने स्थान पर बने रहना आवश्यक है। ६० प्रतिशत रोग पेट के खराब होने के कारण होते हैं। पेट भोजन पचाता है और पचा हुआ भोजन सारे शरीर में पोषण का कार्य करता है। पेट का मुख्य आधार नाभि है। इसके मूल से हटने पर सारे शरीर का संतुलन बिगड़ने लगता है और शरीर में विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

नाभि के मूल स्थान से हटने के कारण : अचानक अधिक वजन उठाना, पाँव फिसल जाना, उछलना–कूदना, लाँघना, ऊबड़–खाबड़ रास्ते में झटका लगना, असावधानी से दाएँ–बाएँ झुकने, तेजी से सीढ़ियाँ उतरने–चढ़ने या अन्य कारणों से किसी एक पैर पर भार पड़ने से नाभि अपने स्थान से हट जाती है। कुछ लोगों की नाभि अनेक कारणों से बचपन में ही विकारग्रस्त हो जाती है।

परीक्षण की विधि : नाभि परीक्षण खाली पेट ही करें। स्वयं परीक्षण ठीक ढंग से नहीं हो पाता, अतः अन्य व्यक्ति की सहायता लें। दोनों हाथों की अंगुलियाँ मिलाने के पश्चात हथेलियों की मध्य रेखा को मिलाकर चाँद की स्थिति बना लें। यदि दोनों छोटी अंगुलियों की तीनों रेखाएँ आगे–पीछे हों, अंगुलियों के पोरवे बराबर नहीं मिलें, दोनों अंगुलियाँ छोटी–बड़ी प्रतीत हों, तो समझिए कि नाभि अपने स्थान पर नहीं है और यदि तीनों रेखाएँ सीधी मिल जाती हैं, तो नाभि मूल स्थान पर है। महिलाओं के नाभि परीक्षण की यह सर्वोत्तम विधि है। पीठ के बल लेट जाएँ, दोनों हाथ शरीर के दाएँ–बाएँ, दोनों पाँवों की एड़ियाँ एवं पंजे मिले हुए। ध्यान से देखें, यदि पैरों के दोनों अंगूठे ऊपर–नीचे दिखाई दें, तो नाभि खिसकी हुई है। यदि अंगूठों की ऊँचाई बराबर हो, तो नाभि ठीक स्थान पर है। शवासन में लेटकर नाभि केन्द्र पर पाँचों अंगुलियों को मिलाकर जाँचें। यदि नाभि को दबाने से नाभि की धुरी पर हृदय की धड़कन या स्पंदन की गति का एहसास हो, तो नाभि ठीक है और यदि धड़कन नाभि के ऊपर, नीचे दाएँ–बाएँ प्रतीत हो, तो नाभि टली हुई है। यह अनुभव है कि प्रायः पुरुषों की नाभि बाईं ओर तथा स्त्रियों की नाभि दाईं ओर टला करती है।

प्रभाव : यदि नाभि अधिक समय तक टली रहती है, तो उदर विकार के अतिरिक्त दाँतों की चमक कम होना तथा पीड़ा होना, नेत्रों की ज्योति कम होना तथा बाल असमय सफेद होने लगते हैं। आलस्य, चिंता, निराशा, चिड़चिड़ापन, भय, नकारात्मक सोच, काम में मन न लगना आदि अनेक विकार, नाभि टलने से हो जाते हैं। नाभि जब अपने मूल स्थान से नीचे की ओर खिसकती है, तो कोलन अर्थात् आँत की कार्य–प्रणाली बिगड़ जाती है तथा पानी सोखने की क्षमता कम हो जाती है और मल में जल की अधिकता होने के कारण दस्त लग जाते हैं। कोलन नाड़ी सॉल्ट चूसने का काम नहीं कर पाती, जिसके कारण महत्वपूर्ण लवण दस्त द्वारा बाहर निकल जाते हैं। स्थिति बिगड़ने पर खून भी आ सकता है, जिससे कमजोरी आ जाती है। नाभि जब ऊपर छाती की ओर खिसकती है, तो गैस की प्रधानता से गैस ऊपर की ओर बढ़ती है, माथा भारी होता है, मस्तिष्क की C.S.F. (Cevera Spiral Fluid) को तैरने में बाधा आती है और ऊपर की सारी शेष पृष्ठ 11 पर

गुण बहुत हैं दही में

अनिता जैन

दही एक पौष्टिक आहार है। इसकी तासीर शीतल होती है। आयुर्वेद के अनुसार दही रुचिकर, भूख बढ़ाने, स्निग्धता प्रदान करने वाला, पाचन में सहायक, वातनाशक, विषनाशक, यकृत की शक्ति बढ़ाने वाला, बवासीर और पेट के रोगों के लिए फायदेमंद, हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देने वाला तथा आंतों की सफाई में सहायक होता है। दही में दूध के सभी गुण मौजूद रहते हैं। दूध में पाए जाने वाले जीवाणु गर्मी पाकर बढ़ने लगते हैं। वे दूध में उपस्थित शर्करा को लेक्टोज अम्ल में तब्दील कर देते हैं, इससे दूध का प्राकृतिक मीठा स्वाद तो खट्टे तीखे स्वाद में परिवर्तित हो जाता है, किंतु दूध में मौजूद अन्य गुण जैसे चिकनाहट, विटामिन ए और के, प्रोटीन, कैल्शियम, चूना, फास्फोरस आदि यथावत विद्यमान रहते हैं। दही रुचिकर, पाचक और शीतल होता है। एक शक्तिदायक खाद्य पदार्थ होने के बावजूद यह मोटापा नहीं बढ़ाता।

वैज्ञानिकों के मतानुसार दही के रासायनिक संगठन में ८६.१ प्रतिशत पानी, १०.६ प्रतिशत ठोस भाग होता है। ठोस हिस्से में चर्बी ४ प्रतिशत, लेक्टोज २.६ प्रतिशत तथा कैल्शियम फास्फोरस, आयरन, विटामिन ए, बी और सी के भी पर्याप्त अंश पाए जाते हैं। गर्मियों में दही की लस्सी अथवा छाछ एक बलवर्द्धक और तृप्तिदायक शीतल पेय है। छाछ में दूध की अपेक्षा वसा कम अवश्य होती है, इसलिए छाछ में दही की अपेक्षा अधिक गुण पाए जाते हैं। दही और छाछ के विभिन्न रोग–निवारक गुणों के कारण ही आयुर्वेद और युनानी उपचार पद्धति में इससे मंदाग्नि, आंतों की कमजोरी, पेचिश तथा दस्तों का उपचार किया जाता है। दही वीर्यवर्द्धक होता है और इससे शुक्राणु पुष्ट होते हैं। यह हृदय व मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है और यकृत को भी मजबूत बनाने में सहायक होता है। हमारा शरीर दही का ६१ प्रतिशत भाग एक घंटे में सहजता से पचा लेता है। इस तरह यह अत्यंत पाचक है। दही शरीर की फालतू चर्बी को कम करने में भी मददगार साबित होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि दही के प्रयोग से कैंसर को प्रारंभिक अवस्था में ही रोका जा सकता है। दही के नियमित सेवन से व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त करता है। रूस के जार्जिया प्रदेश की ५० लाख की आबादी में ८० हजार से अधिक लोग सौ वर्ष की उम्र में भी स्वस्थ व प्रसन्नचित्त हैं। बुल्गारिया में भी सैकड़ों लोग इस अवस्था में पूर्णतया स्वस्थ हैं। दही का भरपूर उपयोग करते हैं। उनके भोजन में दोनों समय दही अनिवार्य रूप से होता है। दही दिल के लिए भी मुफीद है। अमेरिका के प्रो. जार्ज बी. मन ने अनेक शोधों के बाद निष्कर्ष निकाला है कि दही में एक ऐसा तत्व मौजूद होता है, जो रक्त में कोलेस्ट्रॉल को कम करके दिल के दौरे को रोकता है। कोलेस्ट्रॉल एक चर्बीयुक्त पदार्थ है, जो शिराओं को अवरुद्ध कर देता है, नतीजतन हृदय रोग हो जाता है। खाने के बाद दही कोलेस्ट्रॉल की संरचना में गिरावट लाता है। हृदय रोगियों को दही बहुत अधिक खाना चाहिए।

पाचन क्रिया को सुचारू बनाने में भी दही की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक आंतों के निचले हिस्से में फ्लोरा नामक बैक्टीरिया होते हैं। इन बैक्टीरियाओं का भोजन पचाने में बहुत बड़ा योगदान होता है। बदपरहेजी अथवा एलोपैथी की दवाइयों का अधिक सेवन करने से इन फ्लोरा बैक्टीरिया की सक्रियता में कमी आ जाती है, इससे भोजन का पाचन सक्रिय रूप से नहीं हो पाता। दही इस बैक्टीरिया को पुनः सक्रिय बना देता है, जिससे पाचन सही तरह से चलने लगता है। दही बाल धोने के लिए भी उपयोग में लिया जाता है। इससे केश मुलायम, घने, काले व लम्बे होते हैं। बालों की जड़ों तक दही रगड़कर नहाना चाहिए। दही की ठंडी मलाई का पलकों पर लेप करने से गर्मी व जलन कम होने लगेगी। कब्जियत से छुटकारा पाने के लिए दही की छाछ नियमित रूप से चुटकी भर अजवाइन डालकर पिएँ। वजन कम होने पर दही में छुआरा, खोपरा, किशमिश, बादाम, पिस्ता, चिरौंजी आदि मिलाकर नियमति सेवन करें, शीघ्र ही वजन में वृद्धि होगी। दही की इतनी उपयोगिता को देखते हुए आज से ही दही का नियमित सेवन आरंभ कर दें।

पर्यावरण के थर्मामीटर पक्षी

✍ आकांक्षा यादव

प्रसिद्ध पक्षी–विज्ञानी सलीम अली अक्सर यह जुमला दोहराया करते थे कि, "पक्षी हमारे पर्यावरण के थर्मामीटर हैं, उनकी चहचहाहट बताती है कि धरती प्रसन्न है।" तभी तो कभी घर के आँगन में गौरैया, मैना और बुलबुल जैसे पक्षियों की चहचहाहट सुनाई देती थी। कोयल की कूह–कूह मन को भाती थी तो कौए की काँव–काँव दूर बसे किसी अपने रिश्तेदार या ईष्ट मित्र के आने की खबर देती थी। अमरूद के पेड़ पर इस डाली से उस डाली उछल–कूद करता हुआ तोता, पेड़ के हर फल में चोंच मारता, अपनी ही धुन में मगन रहता था और उसकी हर जूठन को बड़े प्यार से खाते और उसकी अठखेलियों को अपलक निहारते हुए बच्चों व बड़े–बूढ़ों के होठों पर बरबस मुस्कान फैल जाती। मोर नाच–नाच कर बारिश आने का संदेश देता था। पर वक्त के साथ बहुत कुछ बदल गया है। पक्षियों की तमाम प्रजातियाँ आज विलुप्त होने के कगार पर हैं। गौरतलब है कि दुनिया में पक्षियों की लगभग ६६०० प्रजातियाँ ज्ञात हैं और उनमें से १८६ प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं। यही परिवेश रहा तो आगामी १०० वर्षों में पक्षियों की ११०० से ज्यादा प्रजातियाँ विलुप्त हो सकती हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करें, तो यहाँ पक्षियों की लगभग १२५० प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से ८५ प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं। भारत में जिन पक्षियों के अस्तित्व पर खतरा है, उनमें मोर, गौरैया, तोता, उल्लू, सारस, गिद्ध, साइबेरियाई सारस, सोनचिरैया, हिमालयन बटेर, बंगाल फ्लेरिकन, गुलाबी सिर वाली बतख इत्यादि शामिल हैं। पक्षी जहाँ जैव विविधता की कड़ी हैं, वहीं हमारी फूड–चैन का एक जरूरी हिस्सा भी हैं। इनके अभाव में प्रकृति का पूरा संतुलन ही गड़बड़ा रहा है।

गौरैया सिर्फ एक चिड़िया का नाम नहीं है, बल्कि हमारे परिवेश, साहित्य, कला, संस्कृति से भी उसका अभिन्न सम्बन्ध रहा है। आज भी बच्चों को चिड़िया के रूप में पहला नाम गौरैया का ही बताया जाता है। साहित्य, कला के कई पक्ष इस नन्ही गौरैया को सहेजते हैं, उसके साथ तादात्म्य स्थापित करते हैं। घरों में धार्मिक कार्यक्रम और समारोह में दीवारों पर चित्रकारी करने में फूल–पत्ती, पेड़ के साथ गौरैया के चित्र उकेरे जाते हैं।

जैव–विविधता के संरक्षण के लिए भी गौरैया और तमाम पक्षियों का होना निहायत जरूरी है। बालमन के पारखी पं. जवाहर लाल नेहरू अक्सर कहा करते थे कि "चिड़िया को दूर से ही देख लेना और आनन्द का अनुभव करना काफी नहीं है। अगर हम उन्हें पहचानें, उनके नाम को जानें और उन्हें चहचहाते सुनकर पहचान सकें, तो हमारा आनन्द और बढ़ जाएगा।" गौरैया वास्तव में एक सामाजिक जीव है और इसे मनुष्यों की संगति पसन्द है। कभी गौरैया घर–परिवार का एक अहम हिस्सा होती थी। हाउस स्पैरो के नाम से मशहूर गौरैया का वैज्ञानिक नाम 'पेसर डोमिस्टिकस' है, जो विश्व के अधिकांशतः भागों में पाई जाती है। भारत में असम घाटी, दक्षिणी असम के निचले पहाड़ी इलाकों के अलावा सिक्किम और देश के प्रायद्वीपीय भागों में बहुतायत से पाई जाती है। गौरैया पूरे वर्ष प्रजनन करती हैं, विशेषतः अप्रैल से अगस्त तक। दो से पाँच अंडे वह एक दिन में, अलग–अलग अंतराल पर देती हैं। नर और मादा मिलकर अंडे की देखभाल करते हैं। अनाज, बीजों, बैरी, फल, चैरी के अलावा बीटल्स, कैटरपिलर्स, द्विपंखी कीट, साफ्लाई, बग्स के साथ ही कोवाही फूल का रस उसके भोजन में शामिल होते हैं। गौरैया आठ से दस फीट की ऊँचाई पर, घरों की दरारों और छेदों के अलावा, छोटी झाड़ियों में अपना घोंसला बनाती हैं।

कहते हैं कि लोग जहाँ भी घर बनाते हैं, देर–सबेर गौरैया के जोड़े वहाँ रहने पहुँच ही जाते हैं। कभी सुबह की पहली किरण के साथ घर की दालानों में ढेरों गौरैया के झुंड अपनी चहक से सुबह को खुशगवार बना देते थे। नन्ही गौरैया के सानिध्य भर से बच्चों के चेहरों पर मुस्कान खिल उठती थी।

प्राचीनकाल से ही गौरैया को उल्लास, स्वतंत्रता, परम्परा और संस्कृति की संवाहक माना जाता रहा है। पर यह नन्ही गौरैया कम ही नजर आती है। हमने उसके घर ही नहीं छीन लिए, बल्कि उसकी मौत का इंतजाम भी कर दिया। हरियाली खत्म कर, कंक्रीटों के जंगल खड़े कर दिए। गगनचुंबी इमारतें बनाने के लिए, गगन को चूमने वाले न जाने कितने परिन्दों का आशियाना उजाड़ दिया। बीते कुछ सालों से बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण, हरियाली कम होने, रहन–सहन में बदलाव, अनलेडेड पेट्रोल के इस्तेमाल से निकलने वाली जहरीली गैस, मोबाइल टॉवरों से निकलने वाली तरंगें जैसे कई कारणों से गौरैया और अन्य परिंदों की संख्या कम होती जा रही है। गौरैया और अन्य पक्षियों का कम होना संक्रमण वाली बीमारियों के फैलने का संकेत है।

यही नहीं, खेतों में कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल कर, गौरैया का कुदरती भोजन भी खत्म कर दिया, जबकि गौरैया हानिकारक कीड़ों–मकोड़ों को खाकर फसल की रक्षा ही करती थी। गौरैया का भोजन अनाज के दाने और मुलायम कीड़े हैं। इसके चूजे तो केवल कीड़ों के लार्वा खाकर ही जीते हैं। कीटनाशकों से कीड़ों के लार्वा मर जाते हैं। ऐसे में चूजों के लिए तो भोजन ही खत्म हो गया है। फिर गौरैया कहाँ से आएगी?

भौतिकवादी जीवनशैली ने बहुत कुछ बदल दिया है। गौरैया आमतौर पर पेड़ों पर अपने घोंसले बनाती है, पर अब तो वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के चलते पेड़–पौधे लगातार कम होते जा रहे हैं। शहरीकरण के नए दौर में घरों में बगीचों के लिए स्थान नहीं है। पेट्रोल के दहन से निकलने वाला मेथिल नाइट्रेट छोटे कीटों के लिए विनाशकारी होता है, जबकि यही कीट गौरैया के चूजों के खाद्य पदार्थ होते हैं। यही नहीं, हम जिस मोबाइल पर गौरैया की चूं–चूं कालर ट्यून के रूप में सेट करते हैं, उसी मोबाइल टावर की तरंगें, इसकी दिशा खोजने वाली प्रणाली को प्रभावित कर रही है और इनके प्रजनन पर भी विपरीत असर पड़ता है। बाबू बनारसी दास नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी लखनऊ और ब्रिटिश ट्रस्ट आर्निथोलॉजी के वैज्ञानिकों ने शोध में पाया है कि गौरैया के अंडों से जिन बच्चों को निकलने में दस से बारह दिन लगते हैं, मोबाइल शेष पृष्ठ 10 पर

पूजा और पर्यावरण

✍ रामकिशोर सिंह 'विरागी'

भारतीय संस्कृति और अध्यात्मम में पूजा की परंपरा आदिकाल से ही चली आ रही है। हम पत्थर की मूर्ति, ग्रंथों, पुस्तकों, देवताओं के बने चित्रों का पूजन किसी–न–किसी रूप में अवश्य करते हैं। हम वन, वृक्ष, पेड़–पौधों तक का पूजन करते हैं। वन की पूजा के क्रम में वन देवता तथ वन देवी की कल्पना, अवधारणा अथवा सत्यता भी हमारी पूजा परंपरा में हैं। वन, वृक्ष, पेड़–पौधों, लता आदि सभी पर्यावरण के अंग हैं। इतना ही नहीं सरोवर, तालाब, पहाड़ आदि की भी पूजा होती है। ये भी पर्यावरण के अंग हैं।

आज पर्यावरण के दूषित होने तथा इसकी शुद्धता व शुचिता के लिए कितना हो–हल्ला, हंगामा विश्वस्तर पर मच रहा है। वैज्ञानिक लगातार अपने शोधों, खोजों से लोगों को पर्यावरण के प्रति सतर्क व सावधान करते आ रहे हैं। परंतु जिस पर्यावरण की शुद्धता व शुचिता के लिए आज इतना कोहराम मचा हुआ है, उसके लिए व्यवस्था तो हमारे ऋषि, मुनियों ने आदिकाल में ही कर दी थी। लेकिन हम लोगों ने उनकी अमृततुल्य वाणी की, अपने अहंकार और लोभीवृत्ति के वशीभूत होकर उपेक्षा की है।

इसी का परिणाम आज सामने आ रहा है। पर्यावरण के लगभग समस्त अवयवों तथा अंगों के प्रति पूजन का भाव आदिकाल से चला आ रहा है। पीपल वृक्ष में, शनिवार के दिन जल देना उसे साक्षात् ब्रह्म मानकर पूजा करना है। वैज्ञानिक शोधों से प्रमाणित हो चुका है कि पीपल वृक्ष दीर्घजीवी होकर सर्वाधिक प्राणवायु (ऑक्सीजन) प्रदान करता है, इसीलिए केवल पीपल वृक्ष के पूजन की परंपरा ही नहीं, बल्कि इसके काटने, जलाने तथा इसकी लकड़ी का किसी तरह उपयोग करने को भी महापाप (अपराध) माना गया है। उसी तरह वट (बरगद) वृक्ष में गुरुवार के दिन जल देना तथा धागे लपेटते हुए फेरी देना, पूजन परंपरा में है, क्योंकि वटवृक्ष भी अपनी विशाल दीर्घजीवी काया से पर्यावरण को सुरक्षित रखता है। इसके साथ नीम वृक्ष की अनिवार्यता भी पर्यावरण को दृष्टिगत रखकर की गई है। नीम की पूजा की परंपरा, देवी मंदिर के आस–पास की गई है। तुलसी का पौधा तो और भी पूजनीय है। प्रत्येक घर में इसके पूजन की परंपरा है। स्त्रियाँ हर दिन स्नान कर, इसे ताजा, हरा तथा सुरक्षित रखने के लिए इसमें जल देती हैं, क्योंकि तुलसी की सुरक्षा–पर्यावरण की सुरक्षा है। तुलसी के पौधे से वायु तथा पर्यावरण की शुद्धता बढ़ती है।

इसके साथ ही हमारे यहाँ नदियाँ भी पूजनीय हैं। यथा–गंगा, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, पुनपुन, मंदाकिनी, फल्गू आदि। इन नदियों में स्नान के साथ मलमूत्र का त्याग या कूड़ा फेंकना महापाप (अपराध) माना जाता है। इसमें पैर डालने से पूर्व क्षमा प्रार्थना करना जरूरी है। नदियों के प्रति पूजन की यह भावना अथवा परंपरा जल–प्रदूषण को रोकने की दृष्टि से ही की गई है। सरोवरों और तालाबों के प्रति भी यही भावना रखते हैं। इस तरह भारतीय चिंतन और दर्शन में पूजा और पर्यावरण का परस्पर गहरा संबंध है।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

✍ सुरेन्द्र सिंह 'सूर्या'

१० मई, १६५७ को अंग्रेजों के विरुद्ध प्रारम्भ हुआ स्वातन्त्र्य समर के बलिदानी वीरों में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम सदैव सूर्य समान जगमगाता रहेगा। अपनी वीरता के कारण वह मर्दानी कहलायी। १८ जून १८५८ का प्रभात अपनी समस्त लालिमा और प्रचण्डता के साथ उदित हुआ। महारानी लक्ष्मीबाई ने विद्युत गति से ग्वालियर पर अधिकार कर लिया परन्तु अंग्रेजी सेना ने भी ग्वालियर में लक्ष्मीबाई को चारों ओर से घेर लिया। प्रभात की पुनीत बेला में महारानी लक्ष्मीबाई ने उठकर स्नान–ध्यान करके नियमानुसार गीता का पाठ किया। उसके होठों पर गीता के श्लोक की पंक्ति थिरकने लगी–

'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक'

मानसिक रूप से युद्ध के लिए तैयार होकर महारानी लक्ष्मी ने शारीरिक रूप से तैयारी शुरू की। उसने कमर में दोनों ओर तलवारें लटकाई और परिकर में भरी हुई पिस्तौलें कसी। गले में पहचान के लिए मोतियों की माला डाल ली। तैयार होकर महारानी ने अपने सैनिकों और सेना–नायकों को बुलाकर अपने हाथ से उन्हें कलेवा वितरित किया। महारानी के हाथ से कलेवा पाकर वीरों का जोश हिलोरे लेने लगा। उन्होंने सिंह गर्जना की–"दोपहर का भोजन हम शत्रुओं को चबाकर करेंगे।" स्वयं महारानी और उसकी महिला सैनिक जुही ने कलेवा करने के स्थान पर केवल थोड़ा–सा शर्बत पिया। महारानी की लेफ्टिनेंट मुन्दर ने आकर कहा–"सरदार! आपका घोड़ा लंगड़ाता है। कल लड़ाई में चोट खाकर घायल हो गया है।"

महारानी ने दूसरा घोड़ा लाने का आदेश दिया। मुन्दर ने अस्तबल में से एक अच्छा और स्वस्थ दिखने वाला घोड़ा लाकर दिया। रानी को वह घोड़ा जँचा नहीं परन्तु विवशता में उसी घोड़े पर सवारी करनी पड़ी। आज रानी लक्ष्मी ने अपने पुत्र दामोदर राव को अपनी पीठ से न बाँधकर, उसे खिला–पिलाकर अपने सेनानायक रामचन्द्र देशमुख की पीठ से बाँध दिया। सभी लक्षण कह रहे थे कि आज रानी मरने–मारने पर उतारू होकर निकल रही है। आज की मोर्चाबंदी इस प्रकार की थी कि उत्तर और पश्चिम के मोर्चे क्रमशः तात्या टोपे और राव साहब को सौंपे गए थे। दक्षिण का मोर्चा दबाया था बांटा के नवाब और पूर्व के मोर्चे पर स्वयं रानी लक्ष्मी तैनात थी।

युद्ध का आरम्भ अंग्रेजी सैनिकों ने कड़ाबीनों से गोलियों की बौछारें छोड़कर किया। उन्होंने सोचा था कि कड़ाबीनों की मार के आग रानी की सेना ठहर न सकेगी। रानी की बन्दूकों ने भी कड़ाबीनों की गोलियों का करारा उत्तर दिया। रानी की अगली पंक्ति ने बंदूकों से बार–बार जोरदार हमले करके अंग्रेजी सेना के कड़ाबीनों की बोलती बंद कर दी। अपनी सेना को पीछे हटते और रानी की सेना को आगे बढ़ता देख अंग्रेजी सेना की पिछली पंक्ति ने अपनी तोपों से गोलों की भयंकर वर्षा प्रारम्भ कर दी। रानी के तोपखाने का संचालन वीरांगना जूही कर रही थी। जूही की तोपें प्रलय–गर्जन के साथ भयंकर आग उगल रही थी। उन तोपों ने अंग्रेजी सेना के बजाय अंग्रेजी तोपखाने को ही अपना निशाना बनाया। अंग्रेजी तोपें एक–एक करके ठंडी पड़ने लगी। अंग्रेजी सेना इस भयंकर मार से कांप उठी। अंग्रेजों ने निर्णय लिया कि यदि जूही की तोपों के मुँह बंद न किये गये तो आज हमारी खैर नहीं। महारानी लक्ष्मीबाई ने जूही ही सहायता के लिए ग्वालियर की सेना की कुमुक भेजी। ग्वालियर की सेना गद्दारी कर गई। जूही की सेना की सहायता के स्थान पर वह अंग्रेजी सेना से जा मिली। ग्वालियर की सेना के विश्वासघात से जूही का तोपखाना कमजोर हो गया। अंग्रेजी सैनिक जूही के तोपखाने पर पिल पड़े। अपने तोपखाने को छिन्न–भिन्न हुआ देख जूही भी अपनी तलवार खींचकर अंग्रेजों पर कूद पड़ी और अंग्रेजी सेना को खेत के समान काटने लगी। अनेक शत्रु–सैनिकों को मौत के घाट उतारने के पश्चात जूही ने लड़ते–लड़ते वीरगति प्राप्त कर ली। जूही को गिरा हुआ देख महारानी लक्ष्मी ने तोपखाने का प्रबंध अपने हाथों में ले लिया। इसी समय कर्नल स्मिथ की आज्ञा से अंग्रेज़ी पलटनों ने रानी की सेना पर दो तरफ से संगीनों से धावे बोल दिए। रानी की सेना घिर गई। उसकी दो तोपें भी छिन गई। रानी को संकट में देखकर उसके लाल–कुर्ती सवार अपूर्व पराक्रम से शत्रु–सेना पर टूट पड़े। स्वयं रानी ने अपने घोड़े की रास दाँतों में दबाकर दोनों हाथों से तलवारों के वार करने प्रारम्भ कर दिये।

महारानी लक्ष्मी ने रणचंडी का रूप धारण कर रखा था। वह अपने दोनों हाथों से शत्रु–सेना को काट–काट कर बिछाती जा रही थी। उसकी सहेली मुन्दर उसके साथ थी। उसके एक बाजू में रघुनाथ सिंह और दूसरे बाजू में बालक दामोदर को अपनी पीठ से बाँधे हुए रामचन्द्र देशमुख थे। रानी के पीछे उसकी रक्षा के लिए था कुँवर गुलमोहम्मद और केवल बीस–पच्चीस बचे हुए लालकुर्ती सवार। लड़ते–लड़ते रानी अपना मार्ग बना रही थी। उसके लालकुर्ती सवारों में से एक को छोड़कर धीरे–धीरे सभी मारे गए। इसी समय तात्या टोपे रानी की सहायता के लिए आ पहुँचे। अंग्रेजी सेना ने अपनी सारी शक्ति तात्या का रास्ता रोकने में लगा दी और उसे रानी के पास नहीं पहुँचने दिया। इसी बीच रानी का अंतिम लालकुर्ती सवार भी मारा गया। अब रानी के साथ केवल चार सरदार रह गए–रघुनाथ सिंह, रामचन्द्र देशमुख, गुलमोहम्मद और मुन्दर। ये सब पीछे से दस–बारह अंग्रेज सवारों से घिरे थे। सामने से भी पैदल सेना के कुछ गोरे भयानक हमले कर रहे थे।

रानी शत्रुओं से बुरी तरह घिर गई। उसकी शक्ति जवाब दे रही थी। उसने धीरे से रघुनाथ सिंह से कहा–"शत्रु–सैनिक मेरे शरीर को छूने न पाएँ।" इस वाक्य को गुलमोहम्मद ने भी सुन लिया। वह और भी तेजी से मार करने लगा। उसने अंग्रेज सवारों को उलझाकर रानी के लिए रास्ता बना दिया। रानी ने अपना घोड़ा स्वर्ण रेखा नाले की ओर मोड़ दिया। नाले को सामने आया देखकर रानी का घोड़ा अड़ गया और उसने नाला कूदने से इंकार कर दिया। रानी ने घोड़े को बहुत पुचकारा, गर्दन थपथपाई और ऐड़ लगाई पर घोड़ा टस से मस नहीं हुआ। इसी समय झपटते हुए कुछ अंग्रेज सवार गुलमोहम्मद के चंगुल से छूटकर रानी के पास आ गए। रानी का घोड़ा अड़ा हुआ देख उनमें से एक ने रानी पर अपनी पिस्तोल से वार कर दिया। खून का फव्वारा फूट पड़ा। संगीन और गोली से घायल होकर भी रानी ने तलवार से एक ही वार से उस गोली चलाने वाले को धराशायी कर दिया। इस समय तक गुलमोहम्मद वहाँ पहुँच चुका था। उसने अपनी तलवार के भीषण वार से गोरे के दो टुकड़े कर दिये। शेष अंग्रेज सवारों पर भी गुलमोहम्मद काल रूप बनकर पिल पड़ा। वे सवार मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए।

संध्या हो चुकी थी। सूर्य डूब गया था। इधर महारानी लक्ष्मी के जीवन का सूरज भी डूब रहा था। वहाँ अब कोई शत्रु नहीं था। रामचन्द्र देशमुख और रघुनाथ सिंह ने संभालकर रानी को घोड़े से उतारा और आवेश में आकर रघुनाथ सिंह ने घोड़े के पेट में कसकर लात दे मारी। वह अड़ियल घोड़ा पीछे मुड़कर भाग खड़ा हुआ। गुलमोहम्मद ने अचेत रानी को अपने घोड़े पर लिटा, बाबा गंगादास की कुटिया तक पहुँचाया। वह उसकी देह को खून से लथपथ देख फूट–फूटकर रो रहा था। बालक दामोदर भी अपनी माँ की यह दशा देखकर बिलख रहा था।

बाबा गंगादास ने अचेत रानी के मुख में गंगाजल डाला। रानी की देह में कुछ चेतना लौटी। अत्यंत क्षीण स्वर से 'हर–हर महादेव' कहती हुई वह फिर अचेत हो गई। उसकी गर्दन लुढ़क गई। वीरता का सूर्य अस्त हो गया। २१ अक्टूबर, १८३५ में प्रज्ज्वलित जीवन ज्योति १८ जून, १८५८ को बुझ गई। समस्या लकड़ियों की थी। बाबा गंगादास की झोपड़ी को उधेड़कर लकड़ियाँ निकाली गई और घास के ढेर पर अर्थी सजाई गई। चिता धू–धू करके जलने लगी। सुबह ईंट बटोरकर चिता–भस्म पर एक कच्चा चबूतरा बना दिया।

ग्वालियर की भूमि में वही कच्चा चबूतरा अब महारानी लक्ष्मीबाई की समाधि के रूप में बता रहा है–

''खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।''

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

जहरीला धुआँ जिम्मेदार कौन?

आसमान में बादलों के तरह छाये जहरीले धुएं के कारण आजकल भारत की राजधानी दिल्ली की साँस उखड़ रही है।

जीव एक-एक साँस के सहारे जीवन पूरा करता है, लेकिन जब वह साँस ही जहरीली हो जाये तो कोई क्या करें? वर्तमान हालात आपातकाल जैसे हैं। आँखों में जलन के साथ पानी आ रहा है। स्कूल बंद किये जा रहे हैं। विशषज्ञों औरन्यूज एजेंसियों के अनुसार हालात कमोबेश वैसे ही हैं जैसे लंदन में १९५२ के ''ग्रेट स्मॉग'' के दौरान थे। उस दौरान वहां करीब ४,००० लोगों की असामयिक मौत हो गई थी। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है यदि दिल्ली में हवा का ऐसा ही स्तर बना रहा तो यहाँ भी असामयिक मौतों हो सकती हैं।

व्यस्त जीवन रोजाना की भागदौड़ और घर से ऑफिस और ऑफिस से घर, किसके पास टाइम है इन बातों पर ध्यान देने का! बस ५० या १०० रुपये का मास्क ले लिया मानों साँस शुद्ध हो गयी और सब कष्ट दूर हो गये हम तो निपट गये जहरीले धुएं से तो हमारी जिम्मेदारी खत्म! कोई करे भी तो क्या? क्योंकि करने वाले ही दिल्ली में इस जहरीले धुएं से निपटने की योजना बनाने के बजाय पिछले साल हुई नोटबंदी का विरोध और जश्न मना रहे थे। हाँ ये बात सब मान रहे हैं कि हालात खराब हैं और इनसे निबटने के लिए सरकार को ही कोशिश करनी चाहिए पर एक सवाल यह भी है क्या बिना नागरिकों के शामिल हुए धुएं से पार पाने के इस युद्ध में अकेली सरकार जीत जाएगी? समाचार पत्रों औश्र न्यूज चौनलों के माध्यम से बताया जा रहा कि सांसों के जरिये फेफड़े में दाखिल होने वाले प्रदूषक कण प्रदूषण मापने की इकाई के अनुसार (पीएम) २.५ और (पीएम) १० का स्तर कई स्थानों पर सुरक्षित सीमा से १७ गुना ज्यादा रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से संचालित निगरानी स्टेशनों का हर घंटा वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) ५०० से ज्यादा रहा जोकि अधिकतम सीमा से कहीं ज्यादा है।

फिलहाल इस सबके लिए हरियाणा, पंजाब के खेतों से उठे धुएं को जिम्मेदार माना जा रहा है लेकिन तथ्य यह भी है कि पराली तो किसान सालों से जला रहे है। जबकि धुएं का दानव पिछले तीन चार सालों से लोगों को ज्यादा निगल रहा है। क्या इसमें अकेले किसान ही दोषी हैं? पेट्रोल, डीजल के बेशुमार दौड़ते वाहन और कचरे और लकड़ी जलाना क्या प्रदूषण के लिए जिम्मेदार नहीं है? अकेले सितम्बर माह में ही राजधानी दिल्ली में करीब १ लाख २५ हजार वाहन कम्परियों द्वारा बेचे गये। सड़कों पर दौड़ते वे वाहन क्या विषैला धुंआ नहीं छोड़ते? हमने पहले भी लिखा था कि कटते जंगल और बढ़ते सीमेंट के जंगलों से बने शहरों से निकलता विषैला धुआं, फैक्ट्रियों, कारखानों और मोटर-कारों से निकलता जहर वातावरण को गैस चैंबर बनाता जा रहा है। यदि आज प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरुद्ध सामूहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जायेगा तो कब तक मानव जीवित रह पायेगा कोई परिकल्पना नहीं की जा सकती।

पिछले दिनों समुद्र के किनारों पर व्हेल मछलियों का मृत मिलना तो आसमान से पक्षियों का बेहोश होकर जमीन पर गिरना ये खबरें आज किसी के लिए कोई मायने नहीं रखती। थोड़े आगे भविष्य में यदि हम स्वच्छ वायु के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर पीठ पर बांधकर चलें तो इस सम्भावना से इंकार नही किया जा सकता। यदि कोई सोच रहा हो कि नहीं ऐसा तो नहीं होगा, तो उनसे बस यह सवाल है कि क्या आज से बीस-तीस वर्ष पहल किसी ने सोचा था कि हमें साफ पानी के लिए घरों में फिल्टर आदि लगाने पड़ेंगे?

पिछले दिनों एक वेबसाइट पर आंकड़े देखे उन्होंने बड़ी सरलता से आंकड़े दिए थे कि भारत में अब प्रति व्यक्ति सिर्फ २८ पेड़ बचे हैं और इनकी संख्या साल दर साल कम होती जा रही है। अब यदि कोई दिल्ली में बैठकर सोचे कि हमारे हिस्से अभी २८ पेड़ है तो वह गलत है क्योंकि ये पेड़ों की गणना पूरे देश में उसी तरह की गई है जिस तरह जनगणना। नेचर जर्नल की इस रिपोर्ट के अनुसार, दुनियाभर में एक व्यक्ति के लिए ४२२ पेड़ मौजूद हैं। दूसरे देशों की बात करें तो पेड़ों की संख्या के मामले में रूस सबसे आगे है। रूस में करीब ६४१ अरब पेड़ हैं, जो किसी भी देश से ज्यादा है। इसके बाद ३१८ अरब पेड़ों की संख्या के साथ कनाडा दूसरे स्थान पर ३०१ अरब पेड़ों की संख्या के साथ ब्राजील तीसरे स्थान पर और २२८ अरब पेड़ों की संख्या के साथ अमेरिका चौथे स्थान पर है।

हम आज इन देशों से अपनी तुलना फैशन से लेकर भाषा और रहन-सहन से कर रहे हैं, जब इनकी तरह हमारी एक नागरिक के तौर पर जिम्मेदारी आती है तो हम सरकार क्या कर रही है? यह सवाल दागकर अपनी जिम्मेदारी से विमुख हो जाते हैं। आज हमारे देश में मंदिरों, मस्जिदों, बुतों-पुतलों मूर्तियों मजारों के लगाने हटाने के लिए रोज झगड़े होते हैं। जबकि किसी की भी याद में लगाई गई मूर्तियां या मजार ऑक्सीजन नहीं देती, बल्कि पेड़ ऑक्सीजनन देते हैं। बिना रोटी और बिन दवा और अन्य आर्थिक कारणों से लोग मरते हैं सबने सुना होगा लेकिन जब लोग खुले मैदान में भी साँस न आने की वजह से मरेंगे तो सोचो जिम्मेदार कौन होगा? इसीलिए जिम्मेदारी सामूहिक है अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं यज्ञ किये जाएं और तक हो सके वाहनों का इस्तेमान कम किया जाए।

आर्य भूमि, जय ज्ञान धरा

✍ सुरेश कुमार शुक्ल 'सन्देश'

वेदों की जननी महामही,
जय शस्यश्यामला वसुन्धरा।
तेरा अभिनन्दन कर प्राची
हो उठती है अनुरागवती,
तेरी गुण-गरिमा से प्रेरित
करती प्रणाम सारी जगती।
आरती निशापति करता है
तारों के दीप असंख्य जला,
पग नीरज की रज धरता है
सागर संयम में ढला-पला।
चन्द्रिकास्नात तेरा आँचल प्रिय लगता सबको, सुधाभरा।
जनता संस्कृतिसम्पन्न हुई
गायत्री, गंगा, गीता से,
नारी गरिमा शिखरस्थ हुई
दमयन्ती, राधा, सीता से।
यमुना लहरें मुरलीधर की
मुरली की याद कराती हैं।
धरती के कण-कण में मानो
चेतना नयी उपजाती हैं।
पर पीड़ा पर तुम द्रवित सदा जय करुणामयि! जय दयाकरा।
कर रही शान्ति का पाठ साँझ
मोहक सिन्दूरी अंचल में,
भैरवी गा रहे द्विजमण्डल
शाखाओं पर निज संकुल में।

हिमवन्त तुम्हारे गौरव का है
अक्षर अटल शिखर शोभन
गंगोत्री, यमुनोत्री मानो
संस्कृतियों के जीवन सदन।
गा रही भारती भारत की जय पुण्य भूमि! जय शुभंकरा!
ऋषियों मुनियों की तपस्थली
तप, त्याग, तेज से प्राणवन्त,
धीरों वीरों के पौरुष से
संरक्षित जीवन प्रभावन्त।
नदियों की कल कल गुंजन से
झरनों के कोकिल कूजन से।
भौरों के मधुरिम गुंजन से,
छेवों के वैदिक पूजन से—
है गूँज रहा कण कण पावन, कण-कण प्रणम्य जय ऋतम्भरा।
जब तक हिम तिलक भाल पर है
जब तक चरणों में सागर है
जब तक आकाश रहे सिर पर
जब तक शशि और दिवाकर है।
जब तक साँसों का दिया जले
जब तक जीवन है हरा-भरा,
जब तक धरती से अम्बर तक
गूँजती रहे लय मनोहरा—
जय आर्यभूमि! जय भरतभूमि! जय देवभूमि! जय ज्ञान धरा!

गोपाष्टमी पर विशेष

साभार - सत्यचक्र

गोपाष्टमी का महत्त्व : प्राचीन मान्यताओं के अनुसार कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से सप्तमी तिथि तक भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी सबसे छोटी अंगुली पर धारण किया था। आठवें दिन हार कर अहंकारी इन्द्र को श्रीकृष्ण की शरण में आना पड़ा था। इसी दिन अष्टमी के दिन वह भगवान कृष्ण से क्षमा माँगते हैं। उसी दिन से कार्तिक शुक्ल पक्ष की अष्टमी को गोपाष्टमी का यह त्यौहार मनाया जाता है। एक मान्यतानुसार इसी दिन भगवान कृष्ण को गाय चराने के लिए वन में भेजा गया था। भारत के अधिकतर सभी भागों में यह पर्व मनाया जाता है। विशेष रूप से गौशालाओं में यह पर्व बहुत महत्त्व रखता है। बहुत से दानी व्यक्ति इस दिन गोशालाओं में दान–दक्षिणा देते हैं। इस दिन सुबह से ही गायों को सजाया जाता है। उसके बाद मेंहदी के थापे तथा हल्दी अथवा रोली से पूजन किया जाता है।

गोपाष्टमी पर्व विधि : इस दिन प्रातः काल उठकर नित्य कर्म से निवृत्त हो स्नान आदि करते हैं। प्रातःकाल में ही गायों को भी स्नान आदि कराया जाता है। इस दिन बछड़े सहित गाय की पूजा करने का विधान है। प्रातःकाल में ही धूप–दीप, गंध, पुष्प, अक्षत, रोली, गुड़, जलेबी, वस्त्र तथा जल से गाय का पूजन किया जाता है और आरती उतारी जाती है। इस दिन कई व्यक्ति ग्वालों को भी उपहार आदि देकर उनका भी पूजन करते हैं। इस दिन गायों को सजाया जाता है। इसके बाद गाय को गो ग्रास देते हैं और गाय की परिक्रमा करते हैं। परिक्रमा करने के बाद गायों के साथ कुछ दूरी तक चलना चाहिए। संध्या समय में जब गाय घर वापिस आती है तब उनका पंचोपचार से पूजन किया जाता है। गाय को साष्टांग प्रणाम किया जाता है। पूजन करने के बाद गाय के चरणों की मिट्टी को माथे से लगाया जाता है। ऐसा करने से व्यक्ति को चिर सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इसके बाद गायों को खाने की वस्तुएँ दी जाती हैं।

गोपाष्टमी मनाने का कारण : गौ अथवा गाय भारतीय संस्कृति का प्राण मानी जाती हैं। इन्हें बहुत ही पवित्र तथा पूज्यनीय माना जाता है। हिन्दू धर्म में यह पवित्र नदियों, पवित्र ग्रंथों आदि की तरह पूज्य माना गया है। शास्त्रों के अनुसार गाय समस्त प्राणियों की माता है। इसलिए आर्य संस्कृति में पनपे सभी सम्प्रदाय के लोग उपासना तथा कर्मकांड की पद्धति अलग होने पर भी गाय के प्रति आदर भाव रखते हैं। गाय को दिव्य गुणों की स्वामिनी माना गया है और पृथ्वी पर यह साक्षात देवी के समान है। गोपाष्टमी को ब्रज संस्कृति का एक प्रमुख उत्सव माना जाता है। भगवान कृष्ण का 'गोविन्द' नाम भी गायों की रक्षा करने के कारण पड़ा था। क्योंकि भगवान कृष्ण ने गायों तथा ग्वालों की रक्षा के लिए सात दिन तक गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी अंगुली पर उठाकर रखा था। आठवें दिन इन्द्र अपना अहं त्याग कर भगवान कृष्ण की शरण में आया था। उसके बाद कामधेनु ने भगवान कृष्ण का अभिषेक किया और उसी दिन से इन्हें गोविन्द के नाम से पुकारा जाने लगा। इसी दिन से अष्टमी के दिन गोपाष्टमी का पर्व मनाया जाने लगा।

अंगों में देवी-देवता : ❖ सनातन धर्म के ग्रंथों में कहा गया है–'सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः।' गाय की देह में समस्त देवी–देवताओं का वास होने से यह सर्वदेवमयी है।

❖ संसार के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद हैं और वेदों में भी गाय की महत्ता और उसके अंग–प्रत्यंग में दिव्य शक्तियाँ होने का वर्णन मिलता है।

❖ पदम पुराण के अनुसार गाय के मुख में चारों वेदों का निवास है। उसके सींगों में भगवान शंकर और विष्णु सदा विराजमान रहते हैं। गाय के उदर में कार्तिकेय, मस्तक में ब्रह्मा, ललाट में रुद्र, सींगों के अग्र भाग में इन्द्र, दोनों कानों में अश्विनीकुमार, नेत्रों में सूर्य और चंद्र, दाँतों में गरुड़, जिह्वा में सरस्वती, अपान (गुदा) में सारे शेष पृष्ठ 11 पर

कार्तिक देव प्रबोधिनी एकादशी तुलसी विवाह

तुलसी पूजा का दिन विष्णु पुराण के अनुसार कार्तिक नवमी कार्तिक सुदी एकादशी को तुलसी विवाह के रूप में उगेख किया है किंतु अन्य धर्म ग्रंथों में प्रबोधिनी एकादशी को शुभ एवं फलदायी बताया गया हैं। इसी दिन गोधूली बेला में भगवान सालिग्राम, तुलसी व शंख का पूजन करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। लोग इस दिन तुलसी एवं भगवान सालिग्राम का विवाह कर पूजा अर्चना करते हैं। यह दिन अत्यंत शुभ माना जाता है और मान्यता है कि इस दिन योगेश्वर भगवान विष्णु अपनी योगनिद्रा से जागते है और उसके बाद सारे शुभ कार्य शुरू किये जाते ह। तुलसी विवाह से कन्यादान के बराबर पुण्य मिलता है साथ ही घर में श्री, संपदा, वैभव–मंगल विराजते हैं। तुलसी की आराधना करते हुए ग्रंथ लिखते हैं–

महाप्रसाद जननी सर्व सौभाग्य वर्धिनी।
आधिव्याधि हरिर्नित्यं तुलेसित्व नमोस्तुते।।

हे तुलसी! आप सम्पूर्ण सौभाग्यों को बढ़ाने वाली हैं, सदा आधि–व्याधि को मिटाती हैं, आपको नमस्कार है। अकाल मृत्यु हरण सर्व व्याधि विनाश।। तुलसी को अकाल मृत्यु हरण करने वाली और सम्पूर्ण रोगों को दूर करने वाली माना गया है।

रोपनात् पालनान् सेकान्
दर्शनात्स्पर्शनात्रृणा।
तुलसी दह्यते पाप
वाढ्मतकाय साञ्चित।।

तुलसी को लगाने से, पालने से, सींचने से, दर्शन करने से, स्पर्श करने से, मनुष्यों के मन, वचन और काया से संचित पाप जल जाते हैं। वायु पुराण में तुलसी पत्र तोड़ने की कुछ नियम बताते हुए लिखा है–

अस्त्रात्वा तुलर्सी छित्वा य
पूजा कुरुते नर।
सोऽपराधी भवेत् सत्यं तत्
सर्वनिष्फलं भवेत।।

अर्थात्–बिना स्नान किए तुलसी को तोड़कर जो मनुष्य पूजा करता है, वह अपराधी है। उसकी की हुई पूजा निष्फल जाती है, इसमें कोई संशय नहीं।

तुलसी की पूजा से घर में सुख–समृद्धि और धन की कोई कमी नहीं होती। इसके पीछे धार्मिक कारण है। तुलसी में हमारे सभी पापों का नाश करने की शक्ति होती है। तुलसी को लक्ष्मी का ही स्वरूप माना गया है। विधि–विधान से इसकी पूजा करने से महालक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और इनकी कृपा स्वरूप हमारे घर पर कभी धन की कमी नहीं होती। कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को तुलसी विवाह का उत्सव मनाया जाता है। इस एकादशी पर तुलसी विवाह का विधिवत पूजन करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

तुलसी पूजन की सामान्य सामग्री - तुलसी पूजा के लिए गन्ना (ईख, विवाह मंडप की सामग्री, सुहागन स्त्री की संपूर्ण सामग्री, घी, दीपक, धूप, सिन्दूर, चंदन, नैवद्य और पुष्प आदि।

तुलसी पूजन का श्रेष्ठ मुहूर्त- शाम ७.५० से ६.२० तक शुभ चौघड़ियां में तुलसी पूजन करें।

तुलसी विवाह की पूजन विधि– तुलसी विवाह के लिए तुलसी के पौधे का गमले को गेरु आदि से सजाएं। गमले के चारों ओर ईख (गन्ने) का मंडप बनाएं। अब गमले के ऊपर ओढनी या सुहाग की प्रतीक चुनरी ओढ़ाएं। गमले को साड़ी में लपेटकर तुलसी को चूड़ी पहनाकर उनका श्रृंगार करें। श्री गणेश सहित सभी देवी–देवताओं का तथा श्री शालिग्राम जी का विधिव्रत पूजन करें। पूजन के करते समय तुलसी मंत्र (तुलस्यै नमः) का जप करें। इसके बाद एक नारियल दक्षिणा के साथ टीका के रूप में रखें। भगवान शालिग्राम की मूर्ति का सिंहासन हाथ में लेकर तुलसीजी की सात परिक्रमा कराएं। आरती के पश्चात विवाहोत्सव पूर्ण किया जाता है। विवाह में जो सभी रीति–रिवाज होते हैं उसी तरह तुलसी विवाह के सभी कार्य किए जाते हैं। विवाह से संबधित मंगल गीत भी गाए जाते हैं। तुलसीनामाष्टक का जप करें अश्वमेघ यज्ञ से प्राप्त पुण्य कई जन्मों तक फल देने वाला होता है। यही पुण्य तुलसी नामाष्टक के नियमित पाठ से मिलता है। तुलसी नामाष्टक का पाठ पूरे विधि–विधान से किया जाना चाहिए।

लाला लाजपत राय पुण्यतिथि पर विशेष

साभार सत्यचक्र

लाल–बाल–पाल इन त्रीमूर्तियों में से एक लाला लाजपत राय थे, जो भारत के स्वतंत्रता अभियान में शामिल हुए थे, जिसके फलस्वरूप बाद में उनके स्वतंत्रता अभियान ने एक विशाल रूप ले लिया था, और वह अभियान अंत में भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाकर ही रुका।

लाला लाजपत राय भारतीय पंजाबी लेखक और एक राजनेता थे, जो ज्यादातर भारतीय स्वतंत्रता अभियान के मुख्य नेता के रूप में याद किये जाते हैं। वे ज्यादातर पंजाब केसरी के नाम से जाने जाते हैं। लाल–बाल–पाल की तिकड़ी में लाल मतलब लाला लाजपत राय ही है। उनके प्रारंभिक जीवन में वे पंजाब राष्ट्रीय बैंक और लक्ष्मी बीमा कंपनी से भी जुड़े थे।

जब वे साइमन कमीशन के विरुद्ध अपनी आवाज उठा रहे थे तभी पुलिस ने उन्हें बहुत पीड़ा दी, और इसके तीन हफ्तों बाद ही उनकी मृत्यु हो गयी। १७ नवम्बर का मृत्यु दिन आज भी भारत में शहीद दिन के रूप में मनाया जाता है।

लाला लाजपत राय प्रारंभिक जीवन

लाला लाजपत राय का जन्म २८ जनवरी १८६५ को धुडिके ग्राम में (मोगा जिला, पंजाब) हुआ। उनके पिता धर्म से अग्रवाल थे। १८७० के अंत और १८८० के प्रारंभ में, जहां उनके पिता एक उर्दू शिक्षक थे तभी राय ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रेवारी (तब की पंजाब, अभी का हरियाणा) के सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूल से ग्रहण की। राय हिंदुत्वता से बहुत प्रेरित थे, और इसी को ध्यान में रखते हुए उहोंने राजनीती में जाने की सोची। जब वे लाहौर में कानून की पढ़ाई कर रहे थे तभी से वे हिंदुत्वता का अभ्यास भी कर रहे थे। उनको इस बात पर बहुत भरोसा था की हिंदुत्वता, राष्ट्र से भी बढ़कर है। लाला लाजपत राय भारत को एक पूर्ण हिंदू राष्ट्र बनाना चाहते थे। हिंदुत्वता, जिसपे वे भरोसा करते थे, उसके माध्यम से वे भारत में शांति बनाये रखना चाहते थे और मानवता को बढ़ाना चाहते थे। ताकि भारत में लोग आसानी से एक–दूसरे की मदद करते हुए एक–दूसरे पर भरोसा कर सकें। क्योंकि उस समय भारतीय हिंदू समाज में भेदभाव, ऊँच–नीच जैसी कई कु–प्रथाएं फैली हुई थी। लाला लाजपत राय इन प्रथाओं की प्रणाली को भी बदलना चाहते थे। अंत में इनका अभ्यास सफल रहा और वे भारत में एक अहिंसक शांति अभियान बनाने में सफल रहे और भारत को स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए ये बहुत जरूरी था। वे आर्य समाज के भक्त और आर्य राजपत्र (जब वे विद्यार्थी थे तब उन्होंने इसकी स्थापना की थी) के संपदाक भी थे।

सरकारी कानून (लॉ) विद्यालय, लाहौर में कानून (लॉ) की पढाई पूरी करने के बाद उन्होंने लाहौर और हिसार में अपना अभ्यास शुरू रखा और राष्ट्रीय स्तर पर दयानंद वैदिक स्कूल की स्थापना भी की, जहां वे दयानंद सरस्वती जिन्होंने हिंदू सोसाइटी में आर्य समाज की पुनर्निर्मित की थी, उनके अनुयायी भी बने।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होने के बाद, उन्होंने पंजाब के कई सारे राजनैतिक अभियानों में हिस्सा लिया। मई १९०७ में अचानक ही बिना किसी पूर्व सूचना के मांडले, बर्मा (म्यांमार) से उन्हें निर्वाहित (देश से निकाला गया) किया गया। वहीं नवम्बर में, उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत ना होने की वजह से वाइसराय, लार्ड मिन्टो ने उनके स्वदेश वापिस भेजने का निर्णय लिया। स्वदेश वापिस आने के बाद लाला लाजपत राय सूरत की प्रेसीडेंसी पार्टी से चुनाव लड़ने लेग लेकिन वहां भी ब्रिटिशों ने उन्हें निष्कासित कर दिया।

१९२१ में उन्होंने समाज की सेवा करने वाले लोगों को ढूंडना शुरू किया, और उन्ही की मदद से एक बिना किसी लाभ के उद्देश्य से एक संस्था की स्थापना की। जो लाहौर में ही थी, लेकिन विभाजन के बाद वो दिल्ली में आ गयी, और भारत के कई राज्यों में उस संस्था की शाखायें भी खोली गयीं।

लाला लाजपत राय का हमेशा से यही मानना था कि 'मनुष्य अपने गुणों से आगे बढ़ता है न की दूसरों की कृपा से' इसलिए हमें हमेशा अपने आप पर भरोसा होना चाहिए, अगर हम में कोई काम करने की काबिलियत है तो निश्चित ही वह काम हम सही तरीके से कर पाएंगे। कोई भी बड़ा काम करने से पहले उसे शुरू करना बहुत जरूरी होता है। जिस समय लाला लाजपत राय स्वतंत्रता अभियान में शामिल हुए उस समय उन्हें ये पता भी नहीं था के वे सफल हो भी पाएंगे या नहीं। लेकिन उन्होंने पूरी ताकत के साथ अपने काम को पूरा करने की कोशिश की और उनके इन्ही कोशिशों के फलस्वरूप बाद में उनके स्वतंत्रता अभियान ने एक विशाल रूप ले लिया था, और वह अभियान अंत में भारत को एक शेष पृष्ठ 11 पर

१५ नवम्बर नाथूराम विनायक गोडसे की पुण्यतिथि पर विशेष

संदर्भ गोपाल गोडसे गांधी वध क्यों

नाथूराम विनायक गोडसे (जन्म १६ मई १९१० – मृत्यु १५ नवम्बर १९४९) एक पत्रकार, हिन्दू राष्ट्रवादी थे। इनका सबसे अधिक चर्चित कार्य मोहनदास करमचन्द गांधी उपाख्य महात्मा गांधी की हत्या था क्योंकि भारत के विभाजन और उस समय हुई साम्प्रदायिक हिंसा में लाखों हिन्दुओं की हत्या के लिये लोगबाग गांधी को ही उत्तरदायी मानते थे। यद्यपि वे अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवम् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी जुड़े रहे, परन्तु बाद में वे अखिल भारतीय हिन्दू महासभा में चले गये।

प्रारम्भिक जीवन : नाथूराम गोडसे का जन्म १६ मई १९१० को भारत के महाराष्ट्र राज्य में पुणे के निकट बारामती नामक स्थान पर चित्तपावन मराठी परिवार में हुआ था। इनके पिता विनायक वामनराव गोडसे पोस्ट आफिस में काम करते थे और माता लक्ष्मी गोडसे सिर्फ एक गृहणी थी। नाथूराम के जन्म का नाम रामचन्द्र था। इनके जन्म से पहले इनके माता–पिता की सन्तानों में तीन पुत्रों की अल्पकाल में ही मृत्यु हो गयी थी केवल एक पुत्री ही जीवित बची थी। इसलिये इनके माता– पिता ने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि यदि अब कोई पुत्र हुआ तो उसका पालन–पोषण लड़की की तरह किया जायेगा। इसी मान्यता के कारण इनकी नाक बचपन में ही छेद दी और नाम भी बदल दिया। बाद में ये नाथूराम विनायक

गोडसे के नाम से प्रसिद्ध हुए।

बचपन : ब्राह्मण परिवार में जन्म होने के कारण इनकी बचपण से ही धार्मिक कार्यों में गहरी रुचि थी। इनके छोटे भाई गोपाल गोडसे के अनुसार ये बचपन में ध्यानावस्था में ऐसे–ऐसे विचित्र श्लोक बोलते थे जो इन्होंने कभी भी पढ़ें ही नहीं थे। ध्यानावस्था में ये अपने परिवार वालों और उनकी कुलदेवी के मध्य एक सूत्र का कार्य किया करते थे परन्तु यह सब १६ वर्ष तक की आयु तक आते–आते स्वतः समाप्त हो गया।

शिक्षा-दीक्षा : यद्यपि इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पुणे में हुई थी परन्तु हाईस्कूल के बीच में ही अपनी पढ़ाई–लिखाई छोड़ दी तथा उसके बाद कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली। धार्मिक पुस्तकों में गहरी रुचि होने के कारण रामायण, महाभारत, गीता, पुराणों के अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, बाल गंगाधर तिलक तथा महात्मा गांधी के साहित्य का इन्होंने गहरा अध्ययन किया था।

राजनैतिक जीवन : अपने राजनैतिक जीवन के प्रारम्भिक दिनों में नाथूराम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गये। अन्त में १९३० में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी छोड़ दिया और अखिल भारतीय हिन्दू महासभा में चले गये। उन्होंने अग्रणी तथा हिन्दू राष्ट्र नामक दो समाचार–पत्रों का सम्पादन भी किया था। वे मुहम्मद अली जिन्ना की अलगाववादी विचार–६ ारा का विरोध करते थे। प्रारम्भ में तो उन्होंने मोहनदास करमचंद गांधी के कार्यक्रमों का समर्थन किया परन्तु बाद में गांधी के द्वारा लगातार और बार–बार हिन्दुओं के विरुद्ध भेदभाव पूर्ण नीति अपनाये जाने तथा मुस्लिम तुष्टीकरण किये जाने के कारण वे गांधी के प्रबल विरोधी हो गये।

हैदराबाद आन्दोलन : १९४० में हैदराबाद के तत्कालीन शासक निजाम ने उसके राज्य में रहने वाले हिन्दुओं पर बलात जजिया कर लगाने का निर्णय लिया जिसका हिन्दू महासभा ने विरोध करने का निर्णय लिया। हिन्दू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष विनायक दामोदर सावरकर के आदेश पर हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं का पहला जत्था नाथूराम गोडसे के नेतृत्व में हैदराबाद गया। हैदराबाद के निजाम ने इन सभी को बन्दी बना लिया और कारावास में कठोर दण्ड दिये परन्तु बाद में हारकर उसने अपना निर्णय वापस ले लिया।

भारत-विभाजन : १९४७ में भारत का विभाजन और विभाजन के समय हुई साम्प्रदायिक हिंसा ने नाथूराम को अत्यन्त उद्वेलित कर दिया। तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए बीसवीं सदी की उस सबसे बडी त्रासदी के लिये मोहनदास करमचन्द गांधी ही सर्वाधिक उत्तरदायी समझ में आये।

गांधी-हत्या की पृष्ठभूमि : विभाजन के समय हुए निर्णय के अनुसार भारत द्वारा पकिस्तान को ७५ करोड़ रुपये देने थे, जिसमें से २० करोड़ दिए जा चुके थे। उसी समय पाकिस्तान ने भारत के कश्मीर प्रान्त पर आक्रमण कर दिया जिसके कारण भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में भारत सरकार ने पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपये न देने का निर्णय किया, परन्तु भारत सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध गांधी अनशन पर बैठ गये। गांधी के इस निर्णय से क्षुब्ध नाथूराम गोडसे और उनके कुछ साथियों ने गांधी का वध करने का निर्णय लिया।

प्रथम प्रयास विफल : गांधी के अनशन से दुखी गोडसे तथा उनके कुछ मित्रों द्वारा गांधी की हत्या योजनानुसार नई दिल्ली के बिरला हाउस पहुँचकर २० जनवरी १९४८ को मदनलाल पाहवा ने गांधी की प्रार्थना–सभा में बम फेका। योजना के अनुसार बम विस्फोट से उत्पन्न अफरा–तफरी के समय ही गांधी को मारना था परन्तु उस समय उनकी पिस्तौल ही जाम हो गयी वह एकदम न चल सकी। इस कारण नाथूराम गोडसे और उनके बाकी साथी वहाँ से भागकर पुणे वापस चले गये जबकि मदनलाल पाहवा को भीड़ ने पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया।

शस्त्र की व्यवस्था : नाथूराम गोडसे गांधी को मारने के लिये पुणे से दिल्ली वापस आये और वहाँ पर पाकिस्तान से आये हुए हिन्दू तथा सिख शरणार्थियों के शिविरों में घूम रहे थे। उसी दौरान उनको एक शरणार्थी मिला, जिससे उन्होंने एक इतालवी शेष पृष्ठ 10 पर

शेष पृष्ठ 12 का **१६ नवम्बर शहीद करतार सिंह.......**

रसालदार गंडा सिंह ने इनाम के लालच में आकर पुलिस के पास गिरफ्तार करवा दिया। करतार सिंह सराभा के गिरफ्तार होने प्र गदर पार्टी टूट गई। गदरियों पर जेल में लाहौर कांसीपरैंसी एक्ट के अधीन मुकद्दमा चला। करतार सिंह सराभा सहित २३ गदरियों को १३ सितंबर १६१५ को फांसी की सजा तथा संपति जब्त करने की सजा सुनाई गई। कई गदरियों को काले पानी की सजा सुनाई तथा अनेकों सजाएं दी गई। १६ नवंबर १६१५ को करतार सिंह सराभा को ६ साथियों सहित फांसी की सजा देकर शहीद कर दिया गया। फांसी के समय भी करतार सिंह सराभा अपनी पसंदीदा कविता गा रहे थे।

''सेवा देश की जिदंड़ीये बड़ी औखी, गलां करनियां ढेर सुखालियां ने,
जिन्हा देश सेवा विच पैर पाया, उन्हां लाख मुसीबतां झलियां ने'

करतार सिंह सराभा तो अपने देश के लिए शहीद हो गया पर उनकी शहीदी से हजारों नौजवान उन्हे अपना आदर्श मान कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने लगे। शहीद भगत सिंह जैसे महान देश भक्त भी शहीद करतार सिंह सराभा को अपना गुरु मानते थे। इन देशभक्त शूरवीरों की कुर्बानियों के कारण ही हमें अपनी इच्छा अनुसार जिन्दगी बिताने, जीवन में उन्नति करने तथा दुनिया की नजर में सम्मान मिला है।

शेष पृष्ठ 9 का **१५ नवम्बर नाथूराम विनायक......**

कम्पनी की बैराटा पिस्तौल खरीदी। नाथूराम गोडसे ने अवैध शास्त्र रखने का अपराध न्यायालय में स्वीकार भी किया था। उसी शरणार्थी शिविर में उन्होंने अपना एक छाया–चित्र (फोटो) खिंचवाया और उस चित्र को दो पत्रों के साथ अपने सहयोगी नारायण आप्टे को पुणे भेज दिया।

गांधी-हत्या : ३० जनवरी १६४८ को नाथूराम गोडसे दिल्ली में बिड़ला भवन में प्रार्थना–सभा के समय से ३० मिनट पहले पहुँच गये। जैसे ही गांधी प्रार्थना–सभा के लिये परिसर में दाखिल हुए, नाथूराम ने पहले उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम किया उसके बाद बिना कोई बिलम्ब किये अपनी पिस्तौल से तीन गोलियाँ मार कर गांधी का अन्त कर दिया। गोडसे ने उसके बाद भागने का कोई प्रयास नहीं किया।

हत्या अभियोग : नाथूराम गोडसे पर मोहनदास करमचन्द गांधी की हत्या के लिये अभियोग पंजाब उच्च न्यायालय में चलाया गया था। इसके अतिरिक्त उन पर १७ अन्य अभियोग भी चलाये गये। किन्तु इतिहासकारों के मतानुसार सत्ता में बैठे लोग भी गांधी जी की हत्या के लिये उतने ही जिम्मेवार थे जितने कि नाथूराम गोडसे या उनके अन्य साथी। इस दृष्टि से यदि विचार किया जाये तो मदनलाल पाहवा को इस बात के लिये पुरस्कृत किया जाना चाहिये था ना कि दण्डित क्योंकि उसने तो हत्या–काण्ड से दस दिन पूर्व उसी स्थान पर बम फोड़कर सरकार को सचेत किया था कि गांधी, जिन्हें बडी श्रद्धा से नेहरू जी बापू कहते थे, अब सुरक्षित नहीं उन्हें कोई भी प्रार्थना सभा में जाकर शूट कर सकता है।

गांधी-हत्या के कारण : गांधी–हत्या के मुकद्में के दौरान न्यायमूर्ति खोसला से नाथूराम ने अपना वक्तव्य स्वयं पढ़ कर सुनाने की अनुमति माँगी थी और उसे यह अनुमति मिली थी। नाथूराम गोडसे का यह न्यायालयीन वक्तव्य भारत सरकार द्वारा प्रतिबन्धित कर दिया गया था। इस प्रतिबन्ध के विरुद्ध नाथूराम गोडसे के भाई तथा गांधी–हत्या के सह–अभियुक्त गोपाल गोडसे ने ६० वर्षों तक वैधानिक लड़ाई लड़ी और उसके फलस्वरूप सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रतिबन्ध को हटा लिया तथा उस वक्तव्य के प्रकाशन की अनुमति दी। नाथूराम गोडसे ने न्यायालय के समक्ष गांधी–वध के जो १५० कारण बताये थे उनमें से प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

१. अमृतसर के जलियाँवाला बाग गोली काण्ड (१६१६) से समस्त देशवासी आक्रोश में थे तथा चाहते थे कि इस नरसंहार के नायक जनरल डायर पर अभियोग चलाया जाये। गांधी ने भारतवासियों के इस आग्रह को समर्थन देने से स्पष्ट मना कर दिया।

२. भगत सिंह व उसके साथियों के मृत्युदण्ड के निर्णय से सारा देश क्षुब्ध था व गांधी की ओर देख रहा था, कि वह हस्तक्षेप कर इन देशभक्तों को मृत्यु से बचायें, किन्तु गांधी ने भगत सिंह की हिंसा को अनुचित ठहराते हुए जनसामान्य की इस माँग को अस्वीकार कर दिया।

३. ६ मई १६४६ को समाजवादी कार्यकर्ताओं को दिये गये अपने सम्बोधन में गांधी ने मुस्लिम लीग की हिंसा के समक्ष अपनी आहुति देने की प्रेरणा दी।

४. मोहम्मद अली जिन्ना आदि राष्ट्रवादी मुस्लिम नेताओं के विरोध को अनदेखा करते हुए १६२१ में गांधी ने खिलाफत आन्दोलन को समर्थन देने की घोषणा की। तो भी केरल के मोपला मुसलमानों द्वारा वहाँ के हिन्दुओं की मारकाट की जिसमें लगभग १५०० हिन्दू मारे गये व २००० से अधिक को मुसलमान बना लिया गया। गांधी ने इस हिंसा का विरोध नहीं किया, वरन् खुदा के बहादुर बन्दों की बहादुरी के रूप में वर्णन किया।

५. १६२६ में आर्य समाज द्वारा चलाए गए शुद्धि आन्दोलन में लगे स्वामी श्रद्धानन्द की अब्दुल रशीद नामक मुस्लिम युवक ने हत्या कर दी, इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप गांधी ने अब्दुल रशीद को अपना भाई कह कर उसके इस कृत्य को उचित ठहराया व शुद्धि आन्दोलन को अनर्गल राष्ट्र–विरोधी तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिये अहितकारी घोषित किया।

६. गांधी ने अनेक अवसरों पर शिवाजी, महाराणा प्रताप व गुरू गोबिन्द सिंह को पथभ्रष्ट देशभक्त कहा।

७. गांधी ने जहाँ एक ओर कश्मीर के हिन्दू राजा हरि सिंह को कश्मीर मुस्लिम बहुल होने से शासन छोड़ने व काशी जाकर प्रायश्चित करने का परामर्श दिया, वहीं दूसरी ओर हैदराबाद के निजाम के शासन का हिन्दू बहुल हैदराबाद में समर्थन किया।

८. यह गांधी ही थे जिन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना को कायदे–आजम की उपाधि दी।

६. कांग्रेस के ध्वज निर्धारण के लिये बनी समिति (१६३१) ने सर्वसम्मति से चरखा अंकित भगवा वस्त्र पर निर्णय लिया किन्तु गांधी की जिद के कारण उसे तिरंगा कर दिया गया।

१०. कांग्रेस के त्रिपुरा अधिवेशन में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को बहुमत से काँग्रेस अध्यक्ष चुन लिया गया किन्तु गांधी पट्टाभि सीतारमय्या का समर्थन कर रहे थे, अतः सुभाष बाबू ने निरन्तर विरोध व असहयोग के कारण पद त्याग दिया।

११. लाहौर कांग्रेस में वल्लभभाई पटेल का बहुमत से चुनाव सम्पन्न हुआ किन्तु गांधी की जिद के कारण यह पद जवाहरलाल नेहरु को दिया गया।

१२. १४–१५ १६४७ जून को दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में भारत विभाजन का प्रस्ताव अस्वीकृत होने वाला था, किन्तु गांधी ने वहाँ पहुँच कर प्रस्ताव का समर्थन करवाया। यह भी तब जबकि उन्होंने स्वयं ही यह कहा था कि देश का विभाजन उनकी लाश पर होगा।

१३. जवाहरलाल की अध्यक्षता में मंत्रीमण्डल ने सोमनाथ मन्दिर का सरकारी व्यय पर पुनर्निर्माण का प्रस्ताव पारित किया, किन्तु गांधी जो कि मंत्रीमण्डल के सदस्य भी नहीं थे, ने सोमनाथ मन्दिर पर सरकारी व्यय के प्रस्ताव को निरस्त करवाया और १३ जनवरी १६४८ को आमरण अनशन के माध्यम से सरकार पर दिल्ली की मस्जिदों का सरकारी खर्चे से पुनर्निर्माण कराने के लिए दबाव डाला।

१४. पाकिस्तान से आये विस्थापित हिन्दुओं ने दिल्ली की खाली मस्जिदों में जब अस्थाई शरण ली तो गांधी ने उन उजड़े हिन्दुओं को जिनमें वृद्ध, स्त्रियाँ व बालक अधिक थे मस्जिदों से खदेड़ बाहर ठिठुरते शीत में रात बिताने पर मजबूर किया गया।

१५. २२ अक्टूबर १६४७ को पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया, उससे पूर्व माउण्टबैटन ने भारत सरकार से पाकिस्तान सरकार को ५५ करोड़ रुपये की राशि देने का परामर्श दिया था। केन्द्रीय मंत्रीमण्डल ने आक्रमण के दृष्टिगत यह राशि देने को टालने का निर्णय लिया किन्तु गांधी ने उसी समय यह राशि तुरन्त दिलवाने के लिए आमरण अनशन शुरू कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप यह राशि पाकिस्तान को भारत के हितों के विपरीत दे दी गयी।

मृत्यु दण्ड : नाथूराम गोडसे को सह–अभियुक्त नारायण आप्टे के साथ १५ नवम्बर १६४६ को पंजाब की अम्बाला जेल में फाँसी पर लटका कर मार दिया गया। उन्होंने अपने अन्तिम शब्दों में कहा था यदि अपने देश के प्रति भक्तिभाव रखना कोई पाप है तो मैंने वह पाप किया है और यदि यह पुण्य है तो उसके द्वारा अर्जित पुण्य पद पर मैं अपना नम्र अधिकार व्यक्त करता हूँ।

शेष पृष्ठ 5 का **पर्यावरण के थर्मामीटर.....**

टावर से निकलने वाले रेडिएशन से अंडों के भीतर बच्चों का विकास रुक जाता है और गौरैया के बच्चे अंडों से महीने भर बाद भी नहीं निकल पाते। आज जरूरत है कि गौरैया और अन्य पक्षियों के संरक्षण के लिए हम अपने स्तर पर भी प्रयास करें। घरों में कुछ ऐसे झरोखे रखें, जहाँ गौरैया घोंसले बना सकें। छत और आँगन पर अनाज के दाने बिखेरने के साथ–साथ गर्मियों में अपने घरों के पास पक्षियों के पीने के लिए पानी रखने, उन्हें आकर्षित करने हेतु आँगन और छतों पर पौधे लगाने, जल चढ़ाने, चावल के दाने डालने की परंपरा जैसे कदम भी इन नन्हे पक्षियों को सलामत रख सकते हैं। इसके अलावा जिनके घरों में गौरैया ने अपने घोंसले बनाए हैं, उन्हें नहीं तोड़ने का आग्रह किया जा सकता है। फसलों में कीटनाशकों का उपयोग नहीं करने और वाहनों में अनलेडेड पेट्रोल का इस्तेमाल न करने जैसी पहल भी आवश्यक हैं।

शेष पृष्ठ 1 का **भाजपा पर बढ़ा अध्यादेश....**

कही थी। वैद्य ने कहा "राम मंदिर का निर्माण राष्ट्रीय सम्मान का मुद्दा है। अभी तक अयोध्या विवाद का निपटारा अदालत में नहीं हो पाया है।" उन्होंने कहा कि कार्यकारिणी में राष्ट्रीय और सामाजिक महत्व के अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की गई। इस दौरान उनसे सवाल पूछा गया कि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी लगातार संघ को निशाना बना रहे हैं। इस पर वैद्य ने कहा– इसमें कुछ नया नहीं है। ये लोग हम पर लंबे समय से हमला करते रहे हैं। उधर, इससे पहले विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने कहा था कि राम मंदिर बनाने के लिए सरकार को शीत सत्र के दौरान अध्यादेश लाने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। हमारी योजना सभी पार्टियों को ये समझाने की है कि उन्हें वोट देने वाला मतदाता अयोध्या में राम मंदिर देखना चाहता है। शिवसेना प्रमुख ऊद्धव ठाकरे ने भी मंदिर के लिए अध्यादेश लाए जाने की वकालत कर चुके हैं। जबकि अयोध्या–बाबरी भूंमि विवाद मामले की सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट नई बेंच बनाएगा। अदालत ने इस मामले की सुनवाई जनवरी तक टाल दी है। चीफ जस्टिस रंजन गोगोई ने कहा कि अभी हमारी प्राथमिकताएं दूसरी हैं। नई बेंच तय करेगी कि मामले की सुनवाई जनवरी, फरवरी या फिर मार्च में से किस महीने में शुरू होगी। इस दौरान लोकसभा चुनाव की तिथियाँ भी निर्धारित हो सकतीं हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की श्री नरेन्द्र मोदी सरकार से भगवान राम के जन्मस्थान पर भव्य श्रीराम मंदिर बनाने के लिये संसद में शीघ्र कानून बनाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार शीघ्र कानून बनाकर श्रीराम जन्म स्थान की भूमि अखिल भारत हिन्दू महासभा को सौपें।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य..1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 4 का **नाभि-दोष का निवारण......**

प्रणालियाँ बिगड़ने से सिरदर्द, माइग्रेन, तनाव आदि रोग हो जाते हैं। फेफड़ों में गैस के दबाव के कारण डायफ्राम के कार्य में बाधा आ जाती है और श्वास लेने और छोड़ने में कष्ट होता है। अस्थमा, ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारियाँ होने लगती हैं। डायफ्राम जब नीचे की ओर दबाव डालता है, तब पाचन–ग्रंथियाँ क्रियाशील रहती हैं, जिससे लीवर, तिल्ली, पेट, छोटी आँत का ऊपरी भाग, ड्यूडोनम और पेन्क्रियाज प्रभावित होते हैं। गैस की प्रधानता होने के कारण, डायफ्राम की झिल्ली ठीक प्रकार से काम नहीं करती, जिससे पाचन–ग्रंथियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

नाभि जब बाईं ओर खिसकती है, तो सर्दी, जुकाम, खाँसी, कफजनित रोग जल्दी–जल्दी होते हैं। दाहिनी ओर टलने पर लीवर खराब होकर मंदाग्नि हो सकती है। पित्ताधिक्य, एसिडिटी, जलन आदि की शिकायत होने लगती है। गर्मी–सर्दी का संतुलन शरीर में बिगड़ जाता है। मंदाग्नि, अपच, अफारा जैसे विकार हो जाते हैं। इसके दाईं या बाईं ओर खिसकने से पेट में दर्द होता है, क्योंकि दोनों ओर के गुर्दों पर दबाव पड़ता है। गुर्दों के ऊपर स्थित एड्रिनल ग्लैंड के कार्य में भी बाधा आ जाती है। नाभि जब पेट के ऊपर की ओर रीढ़ के विपरीत आ जाए, तो मोटापा हो जाता है। जब नीचे रीढ़ की हड्डी की ओर टल जाए, तो व्यक्ति कुछ भी खाए, वह दुबला–कमजोर होता चला जाएगा। इसके खिसकने से शरीर में विकार होते हैं, जिससे मानसिक एवं आध्यात्मिक क्षमताएँ कम हो जाती हैं। जब नाभि ठीक मध्य में होती है, तब स्त्रियाँ गर्भाधारण योग्य होती हैं। यदि नाभि खिसककर नीचे रीढ़ की ओर चली जाती है, तो फैलोपियन ट्यूब नहीं खुलती, जिससे स्त्रियाँ गर्भधारण नहीं कर सकतीं। नाभि को यथास्थान पर लाने के लिए रोगी को रात्रि में कुछ खाने को न दें। खाली पेट ही नाभि–नाड़ी की स्थिति का पता लग सकता है। इसलिए प्रातः खाली पेट निम्न विधि से उपचार करें। भोजन करने से छः घंटे पूर्व दोनों हाथों से खूटियाँ पकड़कर सीधे लटक जाएँ और उचककर खूँटी को चूमने का अभ्यास करें। हाथ के अंगूठे से नाभि पर दबाव देकर नाभि केन्द्र की ओर धकेलें। दोनों हथेलियों को इस प्रकार मिलाएँ कि हथेली के बीच की रेखाएँ मिलने के पश्चात् जो छोटी अंगुली हो, जैसे कि बाएँ हाथ की अंगुली छोटी है, तो छोटी अंगुली वाले बाएँ हाथ को, कोहनी से ऊपर, दाएँ हाथ से पकड़ लें तथा बाएँ हाथ की मुट्ठी को कसकर बंद कर, हाथ को झटके से कंधे की ओर लाएँ। ऐसा १०–१२ बार करें, तो नाभि अपने ठीक स्थान पर आ जाएगी। सौंठ वाला पानी या दूध पिलाएँ और आराम से कंधे व सिर को सहारा देकर उठाएँ। दो चम्मच पिसी सौंफ को गुड़ में मिलाकर एक सप्ताह तक प्रतिदिन सेवन करने से नाभि का खिसकना रुक जाता है।

शुद्धि क्रियाएँ : इसमें कुंजल क्रिया, शंख प्रक्षालन तथा नौलि क्रिया से लाभ मिलता है।

आसन : पादांगुष्ठासन, पश्चिमोत्तासन, कोणासन, सुप्तवज्रासन, मंडूकासन, मयूरासन, पादोत्तानासन, चक्रासन, हस्तपादोत्तानासन, धनुरासन आदि में से कोई भी दो–तीन आसन करें, जिन्हें आसानी से कर सकें।

प्राणायाम : अग्निसार तथा त्रिबंध लगाने से भी नाभि ठीक स्थान पर आ जाती है।

मुद्राएँ : १५–२५ मिनट वायु मुद्रा करने से भी लाभ मिलता है।

शेष पृष्ठ 8 का **गोपाष्टमी पर विशेष........**

तीर्थ, मूत्र–स्थान में गंगा जी, रोमकूपों में ऋषिगण, पृष्ठभाग में यमराज, दक्षिण पार्श्व में वरूण एवं कुबेर, वाम पार्श्व में महाबली यक्ष, मुख के भीतर गंधर्व, नासिका के अग्रभाग में सर्प, खुरों के पिछले भाग में अप्सराएँ स्थित हैं।

❖ गाय के गोबर में लक्ष्मी, गोमूत्र में भवानी, चरणों के अग्रभाग में आकाशचारी देवता, रंभानेकी आवाज में प्रजापति और थनों में समुद्र प्रतिष्ठित हैं।

❖ मान्यता है कि जो मनुष्य प्रातः स्नान करके गौ स्पर्श करता है, वह पापों से मुक्त हो जाता है।

❖ भविष्य पुराण, स्कंद पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, महाभारत में भी गौ के अंग–प्रत्यंग में देवी–देवताओं की स्थिति का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

❖ मान्यता है कि गौ के पैरों में लगी हुई मिट्टी का तिलक करने से तीर्थ–स्नान का पुण्य मिलता है। यानी सनातन धर्म में गौ को दूध देने वालाएक निरा पशुन मानकर सदा से ही उसे देवताओं की प्रतिनिधि माना गया है।

गौ–सेवा का संकल्प : अ माना जाता है कि गायों का समूह जहाँ बैठकर आराम से साँस लेता है, उस स्थान की न केवल शोभा बढ़ती है, बल्कि वहाँ का सारा पाप नष्ट हो जाता है।

❖ तीर्थों में स्नान–दान करने से, ब्राह्मणों को भोजन कराने से, व्रत–उपवास और जप–तप और हवन–यज्ञ करने से जो पुण्य मिलता है, वही पुण्य गौ को चारा या हरी घास खिलाने से प्राप्त हो जाता है।

❖ गौ–सेवा से दुख–दुर्भाग्य दूर होता है और घर में सुख–समृद्धि आती है।

❖ जो मनुष्य गौ की श्रद्धापूर्वक पूजा–सेवा करते हैं, देवता उस पर सदैव प्रसन्न रहते हैं।

❖ जिस घर में भोजन करने से पूर्व गौ–ग्रास निकाला जाता है, उस परिवार में अन्न– धन की कभी कमी नहीं होती।

गोबर और गोमूत्र के गुण : अ गाय ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जिसका मल–मूत्र न केवल गुणकारी, बल्कि पवित्र भी माना गया है।

❖ गोबर में लक्ष्मी का वास होने से इसे 'गोवर' अर्थात गौ का वरदान कहा जाना अधिक उचित होगा।

❖ गोबर से लीपे जाने पर ही भूमि यज्ञ के लिए उपयुक्त होती है।

❖ गोबर से बने उपलों का यज्ञशाला और रसोई घर, दोनों जगह प्रयोग होता है।

❖ गोबर के उपलों से बनी राख खेती के लिए अत्यंत गुणकारी सिद्ध होती है।

❖ गोबर की खाद से फसल अच्छी होती है और सब्जी, फल, अनाज के प्राकृतिक तत्त्वों का संरक्षण भी होता है।

❖ आयुर्वेद के अनुसार, गोबर हैजा और मलेरिया के कीटाणुओं को भी नष्ट करने की क्षमता रखता है।

❖ आयुर्वेद में गौमूत्र अनेक असाध्य रोगों की चिकित्सा में उपयोगी माना गया है।

❖ लिवर की बीमारियों की यह अमोघ औषधि है। पेट की बीमारियाँ, चर्म रोग, बवासीर, जुकाम, जोड़ों के दर्द, हृदय रोग की चिकित्सा में गोमूत्र ने आश्चर्यजनक लाभ दिया है। इसके विधिवत सेवन से मोटापा और कोलेस्ट्राल भी कम होते देखा गया है।

❖ गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र से निर्मित पंचगव्य मन–मन और आत्मा की शुद्धि कर देता है।

❖ तनाव और प्रदूषण से भरे इसे वातावरण की शुद्धि में गाय की भूमिका समझ लेने के बाद हमें गो धन की रक्षा में पूरी तत्परता से जुट जाना चाहिए, क्योंकि तभी गोविन्द–गोपाल की पूजा सार्थक होगी।

❖ गोपाष्टमी के पर्व का मूल उद्देश्य है गो–संवर्धन की तरफ हमारा ध्यान आकृष्ट कराना। अतएव इस त्योहार की प्रासंगिता आज के युग में और बढ़ी है।

शेष पृष्ठ 9 का **लाला लाजपत राय पुण्यतिथि.......**

स्वतंत्र राष्ट्र बनाकर ही रूका।

एक नजर में लाला लाजपत रॉय

१. स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित किया 'आर्य समाज' सार्वजनिक कार्य में आगे था आर्य समाज के विकास के आदर्श की तरफ और समाज सुधार के योजनाओं की तरफ लालाजी आकर्षित हुए। वो सोलह साल की उम्र में आर्य समाज के सदस्य बनें।

२. १८८२ में हिन्दी और उर्दू इनमें से किस भाषा को मान्यता होनी चाहिये, इस विषय पर बड़ी बहस चल रही थी। लालाजी हिन्दी के पक्ष में थे। उन्होंने सरकार को वैसा एक अर्जी दी जिस पर हजारों लोगों के दस्तख्त थे।

३. १८८६ में कानून की उपाधि परीक्षा देकर दक्षिण पंजाब के हिसार में उन्होंने वकील का व्यवसाय शुरु किया।

४. १८८६ में लाहोर को आर्य समाज की तरफ से दयानंद अँगलो–वैदिक कॉलेज का सोचा। उसके लिए लालाजी ने पंजाब में से पाच लाख रुपये जाम किये। १ जून १८८६ में कॉलेज की स्थापना हुयी, लालाजी उसके सचिव बने।

५. आर्य समाज के अनुयायी बनकर वो अनाथ बच्चे, विधवा, भूकंपग्रस्त पीडित और अकाल से पीड़ित इन लोगों की मदद को जाते थे।

६. १९०४ में 'इ पंजाब' नाम का अंग्रेजी अखबार उन्होंने शुरू किया। इस अखबार ने पंजाब में राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू किया।

७. १९०५ में कांग्रेस की ओर से भारत का पक्ष रखने के लिय लालाजी को इग्लेंड भेजने का निर्णय लिया। उसके लिये उनको जो पैसा दिया गया उसमें का आधा पैसा उन्होंने दयानंद अँग्लो–वैदिक कॉलेज और आधा अनाथ विद्यार्थियों के शिक्षा के लिये दिया। इंग्लैड को जाने का उनका खर्च उन्होंने ही किया।

८. १९०७ में लाला लाजपत रॉय किसानों को भड़काते हैं, सरकार के विरोधी लोगों को भड़काते हैं ये आरोप करके सरकार ने उन्हें मंडाले के जेल में रखा था। छह महीनों बाद उनको छोड़ा गया। वहां के भारतीयों में स्वदेश की, स्वातंत्र्य का लालच निर्माण करने के लिए उन्होंने 'यंग इंडिया' ये अखबार निकाला। वैसे ही भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन का गति देने के लिये 'इंडियन होमरूल लीग' की स्थापना की।

९. स्वदेश के विषय में परदेश के लोगों में विशेष जागृती निर्माण करके १९२० में वो अपने देश भारत लौटे। १९२० में कोलकाता में हुये कॉंग्रेस के खास अधिवेशन के लिये उन्हें अध यक्ष के रूप में चुना गया। उन्होंने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया और जेल गए। उसके पहले लालाजी ने ने लाहोर में 'तिलक राजनीति शास्त्र स्कूल' नाम की राष्ट्रीय स्कूल शुरू किया था।

१०. लाला जी ने 'पीपल्स सोसायटी' (लोग सेवक संघ नाम की समाज सेवक की संस्था निकाली थी।

११. १९२५ में कोलकाता में हुये 'हिंदू महासभा; के अधिवेशन के अध्यक्ष का स्थान श्री लालाजी ने ग्रहण किया।

१२. १९२५ में 'वंदे मातरम' नामक उर्दू दैनिक के संपादक भी रहे श्री लालाजी।

१३. १९२६ में जिनिवा में अंतरराष्ट्रीय श्रम सम्मेलन हुवा। भारत के श्रमिकों के प्रतिनिध ी बनकर लालाजी ने उसमे हिस्सा लिया।

१४. १९२७ में भारत कुछ सुधार कर देने हेतु ब्रिटिश सरकार ने सायमन कमीशन की नियुक्ति की पर सायमन कमीशन के सातों सदस्य अग्रेंज थे, एक भी भारतीय नहीं था। इसलिये भारतीय राष्ट्रीय नहीं था। इसलिये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रस ने सायमन कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय लिया।

१५. ३० अक्तूबर १९२८ को सायमन कमीशन पंजाब पहुंचा। लोगों ने लाला लाजपत रॉय के नेतृत्व में साइमन कमीशन के विरोध में बहुत बड़ा मोर्चा निकाला। पुलिस द्वारा किये गये निर्दयी लाठीचार्ज में लाला लाजपत रॉय घायल हुये और दो सप्ताह के बाद अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गयी।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

१६ नवम्बर शहीद करतार सिंह सराभा पर विशेष

हमारा देश भारत कई वर्षों तक विदेशी ताकतों का गुलाम रहा है। अनेकों देश भक्तों ने देश की आजादी के लिए इनके विरूद्ध लड़ाई लड़ी तथा इनकों बता दिया कि वह भारतीयों पर अधिक समय तक राज नहीं कर सकते। समय समय पर अंग्रेजों के विरूद्ध शुरू की गई लहरों में से गदर लहर प्रमुख लहर थी। जिसकी बागडोर करतार सिंह सराभा के हाथ में थी। गदर लहर का प्रमुख उद्देश्य अंग्रेजी सेना में जो भारतीय सैनिक सम्मिलत थे उनके स्वाभिमान तथा देश प्रेम को जगाकर सम्पूर्ण देश में एक ही समय पर अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध की शुरूआत करके देश को अंग्रेज के चंगुल से आजाद करवाना था। गदर लहर के कार्यकर्ता शहीद करतार सिंह सराभा का जन्म ७ मई १८६६ को लुधियाना जिले के सराभे गांव में मंगल सिंह के घर हुआ। करतार सिंह सराभा बचपन से ही अंग्रेजों को देश से निकालना चाहता था। दसवीं कक्षा समाप्त करने के पश्चात् उनके घरवालों ने जमीन गिरवी रख कर उनकों पढ़ने के लिए अमेरिका भेज दिया। परन्तु जब वह अमेरिका जाकर सारी दुनिया के लोगों से मिलें तो उनके अन्दर देश को आजाद करवाने की भावना भड़क उठी। क्योंकि जहाँ पर सभी देशों के लोगों का सम्मान किया जाता था वहीं भारतीयों को गुलाम देश के लोग आदि कह कर अपमानित किया जाता था। कहीं भी भारतीयों को सम्मान नहीं मिलता था। उस समय अमेरिका में देश को आजाद करवाने के लिए लाला हरदयाल की अगुवाई के अधीन २ अप्रैल १६१३ को गदर पार्टी की स्थापना की गई। करतार सिंह सराभा के जोश को देखकर उन्हें हवाई जहाज चलाने तथा अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने की सिखलाई गई। १ नंवबर १६१३ को गदर पार्टी ने देश वासियों में आजादी की भावना पैदा करने के लिए गदर नामक अखबार की शुरूआत की। गदर अखबार को छपवाने तथा इसके द्वारा देशवासियों तक गदर की आवाज को पहुँचाने का कार्य करतार सिंह सराभा को दिया गया। करतार सिंह सराभा बहुत ही मेहनत तथा लगन से देशवासियों में देशप्रेम उत्पन्न करने वाली कविताएं तथा भाषण इकट्ठे करके इस अखबार में छापता था जिससे भारतीयों को अंग्रेजों के विरूद्ध अन्दर ही अन्दर बगावत के लिए तैयार किया जा सके। २५ जुलाई १६१४ ई. को अंग्रेजों तथा जर्मनों के मध्य पहले विश्वयुद्ध की शुरूआत हुई। गदर पार्टी के नेताओं ने इसे उचित अवसर समझते हुए देश की आजादी के लिए गदर करने का फैसला किया क्योंकि उस समय अंग्रेज सरकार पहले विश्वयुद्ध के कारण कमजोर हुई पड़ी थी। गदर पार्टी के आदेश पर विदेशों में रह रहे अनेकों भारतीय नौजवान अपने देश को आजाद करवाने के लिए भारत की तरफ चल पड़े। इन देश भक्तों की अगुवाई शहीद करतार सिंह सराभा, बाबा हरनाम सिंह काहरी, बाब हरनाम सिंह टुडीलाट तथा शहीद बंता सिंह संघवाल जैसे गदरी नौजवान कर रहे थे। परन्तु अंग्रेजी सरकार को उनके भारत आने की सूचना मिल गई। इसलिए अधिकतर नौजवानों को भारत पहुँचते ही पुलिस ने इंडिया सेफटी एक्ट के अधीन गिरफ्तार करके जेलों में बंद कर दिया। परन्तु करतार सिंह सराभा पुलिस से अपना बचाव करते हुए भारत पहुँच ही गया। करतार सिंह सराभा ने विष्णु गणेश पिंगले, संचिदर नाथ सनियाल तथा राज बिहारी बोस जैसे नेताओं को साथ लेकर गदर के कार्यों को तेज कर दिया। करतार सिंह सराभा कभी सुबह फिल्लौर में मीटिंग करवाते तो कभी शाम को लाहौर में मीटिंग करवाते। करतार सिंह सराभा ने अनेकों छावनियों में जाकर हजारों सैनिकों को प्रेरणा देकर गदर करने के लिए तैयार कर लिया। आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, लाहौर तथा फिरोजपुर आदि स्थानों पर सैनिक गदर करके देश को आजाद करवाने के लिए पूर्ण रूप से तैयार थे। करतार सिंह सराभा के प्रभावशाली भाषणों, गदर के लिए प्रेरणा देने वाले 'गदर' अखबार तथा गदर किताबें बाँटने से सम्पूर्ण देश में गदर की तैयारी हो गई। पूरी तरह से तैयारी के बाद २१ फरवरी को गदर करने का फैसला किया गया परन्तु गदर पार्टी का एक व्यक्ति किरपाल सिंह अंग्रेजों के साथ मिल गया तथा उसने अंग्रेज सरकार को गदरियों की योजना की जानकारी दे दी जिस कारण से दो दिन पहले १६ फ़रवरी को ही गदर करने का फैसला किया गया परन्तु पुलिस ने अलग–अलग स्थानों पर अनेकों गदरियों को पकड़ लिया तथा सैनिकों को एक ही रात में दूसरे स्थानों पर भेज दिया गया। पुलिस ने सैकड़ों गदरी नौजवानों तथा देश भक्त सैनिकों को जेल में बंद कर दिया। गदर के असफल होने के उपरांत करतार सिंह सराभा ने सबसे पहले रास बिहारी बोस को सुरक्षित बंगाल वापिस भेजने का प्रबंध किया। फिर करतार सिंह सराभा, हरनाम सिंह टुंडीलाल तथा जगत सिंह अफगानिस्तान की सरहद पर पहुँच गए। पेशावर के धना सिंह ने इन्हें सरहद पार करवाने का भरोसा दिया परन्तु उस समय करतार सिंह सराभा को अपनी एक कविता याद आई, सिंह नाम सेर दा जो चड़े गज के, बाणी सिर सेरां दे की जाना भज के। उस कविता को याद करके देश भक्तों ने देश छोड़ कर जाने का निर्णय त्याग दिया तथा दुबारा से गदर करवाने के लिए वापिस चल पड़े तथा चौकी न ५ के फौजी बड़ सिंह ने उन्हें हथियार देने का वायदा किया। वह लोग २ मार्च २६१५ को उससे हथियार लेने गए तो वहां के शेष पृष्ठ 10 पर

कबिरा खड़ा बजार में

जुबान है! फिसल जाती है

कभी कभी विरोधियों को चित करने के चक्कर में राजनेताओं की जुबानों में इस कदर फिसलन आ जाती है कि उसका खामियाजा बाद में उनको ही भुगतना पड़ता है । कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी जुबानी फिसलन के माहिर खिलाड़ी बनते जा रहे हैं । कई ऐसे कई मामले हुए हैं जिसमें राहुल गांधी एक के बाद एक कई गलतियां कर बैठे हैं। हालांकि मुकदमे का सामना उन्हें अभी करना पड़ा है। मध्य प्रदेश चुनावों में प्रचार के दौरान राहुल गांधी की फिसली जुबान उन पर मुसीबत का सबब बनती दिख रही है। राज्य के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के बेटे कार्तिकेय चौहान ने भोपाल की एक अदालत में राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि का दावा कर दिया है। इसके बाद राहुल गांधी ने अपने फेसबुक पोस्ट में मिजोरम को मणिपुर लिख डाला। इसके बाद उनकी जबर्दस्त आलोचना हुई। राहुल की गलतियों का सिलसिला यहीं नहीं थमा। उन्होंने इसी महीने मध्य प्रदेश में चुनावी सभा में आरोप लगाया कि वित्त मंत्री अरुण जेटली ने संसद में नीरव मोदी से मुलाकात की थी। इसके बाद नीरव मोदी देश छोड़ कर भाग गया, लेकिन राहुल यहां भी गलती कर दी। राहुल के ताजा आरोप के बारे में जेटली ने फेसबुक पर लिखा कि मुझे नहीं याद है कि मैंने कभी नीरव मोदी को देखा भी हो, संसद भवन में उससे मिलने का तो सवाल ही नहीं उठता, राहुल जैसा दावा कर रहे हैं कि नीरव मोदी संसद में आए तो संसद भवन के रिसेप्शन के रिकॉर्ड में इसका जिक्र होगा। क्या राहुल यह मानते हैं कि अगर एक झूठ बार–बार बोला जाये तो खुद को उसके सच होने का यकीन हो जाता है, या फिर यह मामला एक मसखरे राजकुमार की मसखरी का है। राहुल गांधी ने इस आरोप पर सफाई नहीं दी है। राहुल गांधी की गड़बड़ी का एक और मुद्दा सेना अफसरों और जवानों के लिए वन रैंक वन पेंशन यानी ओआरओपी का है। २०१४ में बीजेपी के घोषणा पत्र में ओआरओपी का वादा करने का राहुल गांधी ने जिक्र कियां था। १६ अप्रैल २०१४ को कांग्रेस पार्टी के एक ट्वीट में कहा गया कि मैनीफेस्टो में बीजेपी ने लिखा है, हम वन रैंक वन पेंशन करेंगे। ओआरओपी हो गया है, हमने कर दिया है। लेकिन पूर्व सैनिक कर्मियों के एक प्रतिनिधि मंडल से राहुल गांधी ने मुलाकात की, इसमें उन्होंने उन्हें कहा कि कांग्रेस की अगुवाई वाली सरकार वन रैंक वन पेंशन के मुद्दे पर सभी वादों को पूरा करेगी। सिर्फ राहुल गांधी ही ऐसी गड़बड़ियां नहीं करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कई भाषणों में भी ऐतिहासिक और तथ्यात्मक गलतियां दर्ज की गई हैं जिनके बारे में समय समय पर लिखा गया है। पीएम मोदी के भाषणों में भी कई बार ऐसा हुआ जब उनकी जुबान फिसली। पीएम बनने से पहले उन्होंने कहा कि १६४७ में एक रुपया एक डॉलर के बराबर था, जबकि हकीकत यह है कि तब रुपये की तुलना पाउंड से होती थी और एक रुपए का मूल्य तीस सेंट था। एक बार उन्होंने गलती से महात्मा गांधी को मोहनदास की जगह मोहनलाल करमचंद गांधी कह दिया था। उनके मुंह से लाल किले की जगह लाल दरवाजा निकल गया था। उन्होंने कहा था कि पीएम १५ अगस्त को लाल दरवाजे से भाषण देते हैं। स्वतंत्रता सेनानी श्यामजी कृष्ण वर्मा की जगह पीएम मोदी श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जिक्र कर बैठे थे। मध्य प्रदेश की ही बात करें तो अभी कांग्रेस के दो नेताओं के भाषणों में हुई गलतियों ने सुर्खियां बटोरी हैं। एक भाषण कांग्रेस सांसद कांतिलाल भूरिया का है, भूरियाजी राहुल गांधी और राजीव गांधी में गड़बड़ी कर बैठे। अब आने वाले समय में वह अपनी गलतियों से कितना सबक लेंगे, यह देखने वाली बात होगी लेकिन फिलहाल उनकी जुबान फिसलने का दौर जारी है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 14 नवम्बर से 20 नवम्बर 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।